

Matthew मत्ती

१ ईसा' मसीह इब्न- ए दाऊद इब्न- ए इब्राहीम का नसबनामा।
 २ इब्राहीम से इज़हाक पैदा हुआ, और इज़हाक से याकूब पैदा हुआ,
 और या'कूब से यहूदा और उस के भाई पैदा हुए; ३ और यहूदा से
 फ़ारस और ज़ारह तमर से पैदा हुए, और फ़ारस से हसरोन पैदा
 हुआ, और हसरोन से राम पैदा हुआ; ४ और राम से अम्मीनदाब
 पैदा हुआ, और अम्मीनदाब से नह्सोन पैदा हुआ, और नह्सोन
 से सलमोन पैदा हुआ; ५ और सलमोन से बो'अज़ राहब से पैदा
 हुआ, और बो'अज़ से ओबेद रूत से पैदा हुआ, और ओबेद से
 यस्सी पैदा हुआ; ६ और यस्सी से दाऊद बादशाह पैदा हुआ। और
 दाऊद से सुलैमान उस औरत से पैदा हुआ जो पहले ऊरिय्याह की
 बीवी थी; ७ और सुलैमान से रहुब'आम पैदा हुआ, और रहुब'आम
 से अबियाह पैदा हुआ, और अबियाह से आसा पैदा हुआ; ८ और
 आसा से यहूसफ़त पैदा हुआ, और यहूसफ़त से यूराम पैदा हुआ,
 और यूराम से उज़्ज़ियाह पैदा हुआ; ९ उज़्ज़ियाह से यूताम पैदा
 हुआ, और यूताम से आख़ज़ पैदा हुआ, और आख़ज़ से हिज़क्रियाह
 पैदा हुआ; १० और हिज़क्रियाह से मनस्सी पैदा हुआ, और मनस्सी
 से अमून पैदा हुआ, और अमून से यूसियाह पैदा हुआ; ११ और
 गिरफ़तार होकर बाबुल जाने के ज़माने में यूसियाह से यकूनियाह
 और उस के भाई पैदा हुए; १२ और गिरफ़तार होकर बाबुल जाने
 के बा'द यकूनियाह से सियाल्तीएल पैदा हुआ, और सियाल्तीएल
 से ज़रुब्बाबुल पैदा हुआ। १३ और ज़रुब्बाबुल से अबीहूद पैदा
 हुआ, और अबिहूद से इलियाक्रीम पैदा हुआ, और इलियाक्रीम से

आज़ोर पैदा हुआ; १४ और आज़ोर से सदोक पैदा हुआ, और सदोक से अखीम पैदा हुआ, और अखीम से इलीहूद पैदा हुआ; १५ और इलीहूद से इलीअज़र पैदा हुआ, और अलीअज़र से मत्तान पैदा हुआ, और मत्तान से याकूब पैदा हुआ; १६ और याकूब से यूसुफ़ पैदा हुआ, ये उस मरियम का शौहर था जिस से ईसा' पैदा हुआ, जो मसीह कहलाता है। १७ पस सब पुश्तें इब्राहीम से दाऊद तक चौदह पुश्तें हुईं, और दाऊद से लेकर गिरफ़्तार होकर बाबुल जाने तक चौदह पुश्तें, और गिरफ़्तार होकर बाबुल जाने से लेकर मसीह तक चौदह पुश्तें हुईं। १८ अब ईसा' मसीह की पैदाइश इस तरह हुई कि जब उस की माँ मरियम की मंगनी यूसुफ़ के साथ हो गई: तो उन के एक साथ होने से पहले वो रूह-उल कुद्स की कुदरत से हामिला पाई गई। १९ पस उस के शौहर यूसुफ़ ने जो रास्तबाज़ था, और उसे बदनाम नहीं करना चाहता था। उसे चुपके से छोड़ देने का इरादा किया। २० “ वो ये बातें सोच ही रहा था, कि खुदावन्द के फ़रिश्ते ने उसे ख़्वाब में दिखाई देकर कहा, “‘ऐ यूसुफ़’” इब्न -ए दाऊद अपनी बीवी मरियम को अपने यहाँ ले आने से न डर; क्योंकि जो उस के पेट में है, वो रूह- उल -कुद्स की कुदरत से है।” २१ उस के बेटा होगा और तू उस का नाम ईसा' रखना, क्योंकि वह अपने लोगों को उन के गुनाहों से नजात देगा।’ २२ यह सब कुछ इस लिए हुआ कि जो खुदावन्द ने नबी के जरिये कहा था, वो पूरा हो कि | २३ “ ‘देखो एक कुंवारी हामिला होगी। और बेटा जनेगी और उस का नाम इम्मानुएल रखेंगो’” जिसका मतलब है- खुदा हमारे साथ।” २४ पस यूसुफ़ ने नींद से जाग कर वैसा ही किया जैसा खुदावन्द के फ़रिश्ते ने उसे हुक्म दिया था, और अपनी बीवी को अपने यहाँ ले गया। २५ और उस को न जाना जब तक उस के बेटा न हुआ और उस का नाम ईसा' रख्वा ।

२

१ जब ईसा' हेरोदेस बादशाह के ज़माने में यहूदिया के बैत-लहम में पैदा हुआ। तो देखो कई मजूसी पूरब से यरूशलीम में ये कहते हुए आए। २ “यहूदियों का बादशाह जो पैदा हुआ है, वो कहाँ है ? क्योंकि पूरब में उस का सितारा देखकर हम उसे सज्दा करने आए हैं।” ३ यह सुन कर हेरोदेस बादशाह और उस के साथ यरूशलीम के सब लोग घबरा गए। ४ “ और उस ने क्रौम के सब सरदार काहिनों और आलिमों को जमा करके उन से पूछा; “मसीह की पैदाइश कहाँ होनी चाहिए? “ ५ उन्होंने ने उस से कहा “यहूदिया के बैत-लहम में, क्योंकि नबी के जरिये यूँ लिखा गया है, कि ६ “ऐ बैत-लहम, यहूदिया के इलाके तू यहूदाह के हाकिमों में हरगिज़ सब से छोटा नहीं। क्योंकि तुझ में से एक सरदार निकलेगा जो मेरी क्रौम इस्राईल की निगेहबानी करेगा।” ७ इस पर हेरोदेस ने मजूसियों को चुपके से बुला कर उन से मालूम किया कि वह सितारा किस वक़्त दिखाई दिया था। ८ और उन्हें ये कह कर “बैतलहम भेजा कि जा कर उस बच्चे के बारे में ठीक ठीक मालूम करो और जब वो मिले तो मुझे ख़बर दो ताकि मैं भी आ कर उसे सिज्दा करूँ।” ९ “ वो बादशाह की बात सुनकर रवाना हुए ““और देखो, जो सितारा उन्होंने पूरब में देखा था; वो उनके आगे आगे चला; यहाँ तक कि उस जगह के ऊपर जाकर ठहर गया जहाँ वो बच्चा था।” १० वो सितारे को देख कर निहायत ख़ुश हुए। ११ और उस घर में पहुँचकर बच्चे को उस की माँ मरियम के पास देखा; और उसके आगे गिर कर सिज्दा किया। और अपने डिब्बे खोल कर सोना, और लुबान और मुर उसको नज़्र किया। १२ और हेरोदेस के पास फिर न जाने की हिदायत ख़्वाब में पाकर दूसरी राह से अपने मुल्क को रवाना हुए। १३ जब वो रवाना हो गए तो देखो खुदावन्द के फ़रिश्ते ने यूसुफ़ को ख़्वाब में दिखाई देकर कहा, “उठ बच्चे और उस की माँ को साथ लेकर मिस्र को भाग जा: और जब तक कि मैं तुझ से न कहूँ वहीं रहना; क्योंकि हेरोदेस

इस बच्चे को तलाश करने को है, ताकि इसे हलाक करे।” १४ पस वो उठा और रात के वक़्त बच्चे और उस की माँ को साथ ले कर मिस्र के लिए रवाना हो गया। १५ और हेरोदेस के मरने तक वहीं रहा ताकि जो खुदावन्द ने नबी के जरिये कहा था, वो पूरा हो “कि मिस्र से मैंने अपने बेटे को बुलाया।” १६ जब हेरोदेस ने देखा कि मजूसियों ने मेरे साथ हँसी की तो निहायत गुस्सा हुआ और आदमी भेजकर बैतलहम और उसकी सब सरहदों के अन्दर के उन सब लड़कों को क़त्ल करवा दिया जो दो दो बरस के या इस से छोटे थे, उस वक़्त के हिसाब से जो उसने मजूसियों से तहक़ीक़ की थी। १७ उस वक़्त वो बात पूरी हुई जो यर्मियाह नबी के जरिये कही गई थी। १८ “रामा में आवाज़ सुनाई दी, रोना और बड़ा मातम। राख़िल अपने बच्चे को रो रही है और तसल्ली क़बूल नहीं करती, इसलिए कि वो नहीं है।” १९ जब हेरोदेस मर गया तो देखो खुदावन्द के फ़रिश्ते ने मिस्र में यूसुफ़ को ख़्वाब में दिखाई देकर कहा कि । २० उठ इस बच्चे और इसकी माँ को लेकर इस्राईल के मुल्क मे चला जा, क्यूँकि जो बच्चे की जान लेने वाले थे वो मर गए २१ पस वो उठा और बच्चे और उस की माँ को ले कर मुल्क-ए-इस्राईल में लौट आया। २२ मगर जब सुना कि अख़िलाउस अपने बाप हेरोदेस की जगह यहूदिया में बादशाही करता है तो वहाँ जाने से डरा, और ख़्वाब में हिदायत पाकर गलील के इलाक़े को रवाना हो गया। २३ और नासरत नाम एक शहर में जा बसा ताकि जो नबियों की मारफ़त कहा गया था, वो पूरा हो ‘वह नासरी कहलाएगा।’

३

१ उन दिनों में यहून्ना बपतिस्मा देने वाला आया और यहूदिया के वीरान में ये ऐलान करने लगा कि , २ “तौबा करो, क्यूँकि आस्मान की बादशाही नज़दीक आ गई है।” ३ ये वही है जिस का ज़िक़्र यसायाह नबी के जरिये यूँ हुआ कि ‘वीरान में पुकारने वाले की

आवाज़ आती है, कि ख़ुदावन्द की राह तैयार करो! उसके रास्ते सीधे बनाओ।^४ ये यूहन्ना ऊँटों के बालों की पोशाक पहने और चमड़े का पटका अपनी कमर से बाँधे रहता था। और इसकी ख़ुराक टिट्टियाँ और जंगली शहद था।^५ उस वक़्त यरूशलीम, और सारे यहूदिया और यरदन और उसके आस पास के सब लोग निकल कर उस के पास गये।^६ और अपने गुनाहों का इकरार करके। यरदन नदी में उस से बपतिस्मा लिया? ^७ “मगर जब उसने बहुत से फ़रीसियों और सद्कियों को बपतिस्मे के लिए अपने पास आते देखा तो उनसे कहा कि, ““ए साँप के बच्चे”” तुम को किस ने बता दिया कि आने वाले ग़ज़ब से भागो ?” ^८ पस तौबा के मुताबिक़ फ़ल लाओ। ^९ “ और अपने दिलों में ये कहने का ख़याल न करो कि अब्रहाम हमारा बाप है क्यूँकि मैं तुम से कहता हूँ, कि ““ख़ुदा”” इन पत्थरों से अब्रहाम के लिए औलाद पैदा कर सकता है। “^{१०} जब दरख़्तों की जड़ पर कुल्हाड़ा रख्वा हुआ है पस, जो दरख़्त अच्छा फ़ल नहीं लाता वो काटा और आग में डाला जाता है। ^{११} “ “मैं तो तुम को तौबा के लिए पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन जो मेरे बाद आता है मुझ से बड़ा है; मैं उसकी जूतियाँ उठाने के लायक़ नहीं। वो तुम को रूह -उल कुददूस और आग से बपतिस्मा देगा। “^{१२} उस का छाज उसके हाथ में है और वो अपने खलियान को ख़ूब साफ़ करेगा, और अपने गेहूँ को तो खत्ते में जमा करेगा, मगर भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने वाली नहीं।” ^{१३} “ उस वक़्त ““ईसा”” गलील से यर्दन के किनारे यूहन्ना के पास उस से बपतिस्मा लेने आया।” ^{१४} मगर यूहन्ना ये कह कर उसे मना करने लगा, “मैं आप तुझ से बपतिस्मा लेने का मोहताज हूँ, और तू मेरे पास आया है?” ^{१५} ईसा' ने जवाब में उस से कहा, “अब तू होने ही दे, क्यूँकि हमें इसी तरह सारी रास्तबाज़ी पूरी करना मुनासिब है। इस पर उस ने होने दिया।” ^{१६} “ और ““ईसा”” बपतिस्मा लेकर

फ़ौरन पानी के ऊपर आया। ““और देखो, उस के लिए आस्मान खुल गया और उस ने ““खुदा”” की रूह को कबूतर की शकल में उतरते और अपने ऊपर आते देखा।” १७ और देखो आसमान से ये आवाज़ आई: ये मेरा प्यारा बेटा है जिससे मैं खुश हूँ।”

४

१ “उस वक़्त रूह ““ईसा”” को जंगल में ले गया ताकि इब्लीस से आजमाया जाए।” २ और चालीस दिन और चालीस रात फ़ाका कर के आख़िर को उसे भूख लगी। ३ “और आजमाने वाले ने पास आकर उस से कहा “अगर तू ““खुदा”” का बेटा है तो फ़रमा कि ये पत्थर रोटियाँ बन जाएँ।” ४ “उस ने जवाब में कहा, “लिखा है आदमी सिर्फ़ रोटी ही से जिंदा न रहेगा; बल्कि हर एक बात से जो ““खुदा”” के मुँह से निकलती है।” ५ तब इब्लीस उसे मुक़द्दस शहर में ले गया और हैकल के कंगूरे पर खड़ा करके उस से कहा। ६ ““अगर तू ““खुदा”” का बेटा है तो अपने आपको नीचे गिरा दे; क्योंकि लिखा है कि ‘वह तेरे बारे में अपने फ़रिश्तों को हुक्म देगा, और वह तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे ताकि ऐसा न हो कि तेरे पैर को पत्थर से ठेस लगे।’” ७ ‘ईसा’ ने उस से कहा ये भी लिखा है; ‘तू खुदावन्द अपने खुदा की आजमाइश न कर।’ ८ फिर इब्लीस उसे एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया, और दुनिया की सब सल्तनतें और उन की शान -ओ शौकत उसे दिखाई। ९ और उससे कहा कि अगर तू झुक कर मुझे सज्दा करे तो ये सब कुछ तुझे दे दूंगा १० “ईसा’ ने उस से कहा; ““ऐ शैतान दूर हो क्योंकि लिखा है, तू खुदावन्द अपने खुदा को सज्दा कर और सिर्फ़ उसी की इबादत कर।” ११ तब इब्लीस उस के पास से चला गया; और देखो फ़रिश्ते आ कर उस की ख़िदमत करने लगे। १२ जब उस ने सुना कि यूहन्ना पकड़वा दिया गया तो गलील को रवाना हुआ; १३ और नासरत को छोड़ कर कफ़रनहूम में जा बसा जो झील के किनारे ज़बलून और नफ़ताली की सरहद पर है। १४ ताकि जो यसा'याह नबी की मारफ़त

कहा गया था, वो पूरा हो। १५ “ज़बूलून का इलाका, और नफ़ताली का इलाका, दरिया की राह यर्दन के पार, ग़ैर कौमों की गलील : १६ या'नी जो लोग अन्धेरे में बैठे थे, उन्होंने बड़ी रौशनी देखी; और जो मौत के मुल्क और साये में बैठे थे, उन पर रौशनी चमकी।” १७ उस वक़्त से ईसा' ने एलान करना और ये कहना शुरू किया “तौबा करो, क्योंकि आस्मान की बादशाही नज़दीक आ गई है।” १८ उस ने गलील की झील के किनारे फिरते हुए दो भाइयों या'नी शमाऊन को जो पतरस कहलाता है; और उस के भाई अन्द्रियास को। झील में जाल डालते देखा, क्योंकि वह मछली पकड़ने वाले थे। १९ और उन से कहा, “मेरे पीछे चले आओ, मैं तुम को आदमी पकड़ने वाला बनाऊंगा।” २० वो फ़ौरन जाल छोड़ कर उस के पीछे हो लिए। २१ वहाँ से आगे बढ़ कर उस ने और दो भाइयों या'नी, ज़ब्दी के बेटे याकूब और उस के भाई यूहन्ना को देखा। कि अपने बाप ज़ब्दी के साथ नाव पर अपने जालों की मरम्मत कर रहे हैं। और उन को बुलाया। २२ वह फ़ौरन नाव और अपने बाप को छोड़ कर उस के पीछे हो लिए। २३ ईसा' पुरे गलील में फिरता रहा, और उनके इबादतख़ानों में तालीम देता, और बादशाही की खुशख़बरी का एलान करता और लोगों की हर तरह की बीमारी और हर तरह की कमज़ोरी को दूर करता रहा। २४ और उस की शोहरत पूरे सूरिया में फैल गई, और लोग सब बिमारों को जो तरह तरह की बीमारियों और तक्लीफों में गिरिफ़्तार थे; और उन को जिन में बदरूहें थी, और मिर्गी वालों और मफ़्लूजों को उस के पास लाए और उसने उन को अच्छा किया। २५ और गलील, और दिकपुलिस, और यरूशलम, और यहूदिया और यर्दन के पार से बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली।

५

१ वो इस भीड़ को देख कर पहाड़ पर चढ़ गया। और जब बैठ गया तो उस के शागिर्द उस के पास आए। २ और वो अपनी ज़बान खोल कर उन को यूँ ता'लीम देने लगा। ३ मुबारक हैं वो जो दिल के

गरीब हैं क्योंकि आस्मान की बादशाही उन्ही की है। ४ मुबारक हैं वो जो ग़मगीन हैं, क्योंकि वो तसल्ली पाँएंगे। ५ मुबारक हैं वो जो हलीम हैं, क्योंकि वो ज़मीन के वारिस होंगे। ६ मुबारक हैं वो जो रास्तबाज़ी के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वो सेर होंगे। ७ मुबारक हैं वो जो रहमदिल हैं, क्योंकि उन पर रहम किया जाएगा। ८ “मुबारक हैं वो जो पाक दिल हैं, क्योंकि वह ““खुदा”” को देखेंगे।” ९ “मुबारक हैं वो जो सुलह कराते हैं, क्योंकि वह ““खुदा”” के बेटे कहलाएँगे।” १० मुबारक हैं वो जो रास्तबाज़ी की वज़ह से सताये गए हैं, क्योंकि आस्मान की बादशाही उन्ही की है। ११ जब लोग मेरी वज़ह से तुम को लान-तान करेंगे, और सताएँगे; और हर तरह की बुरी बातें तुम्हारी निस्बत नाहक़ कहेंगे; तो तुम मुबारक होंगे। १२ खुशी करना और निहायत शादमान होना क्योंकि आस्मान पर तुम्हारा अज़्र बड़ा है। इसलिए कि लोगों ने उन नबियों को जो तुम से पहले थे, इसी तरह सताया था। १३ तुम ज़मीन के नमक हो। लेकिन अगर नमक का मज़ा जाता रहे तो वो किस चीज़ से नमकीन किया जाएगा? फिर वो किसी काम का नहीं सिवा इस के कि बाहर फेंका जाए और आदमियों के पैरों के नीचे रौंदा जाए। १४ तुम दुनिया के नूर हो। जो शहर पहाड़ पर बसा है वो छिप नहीं सकता। १५ और चिराग़ जलाकर पैमाने के नीचे नहीं बल्कि चिराग़दान पर रखते हैं; तो उस से घर के सब लोगों को रोशनी पहुँचती है। १६ इसी तरह तुम्हारी रोशनी आदमियों के सामने चमके, ताकि वो तुम्हारे नेक कामों को देखकर तुम्हारे बाप की जो आसमान पर है बड़ाई करें। १७ “ये न समझो कि मैं तौरैत या नबियों की किताबों को मन्सूख करने आया हूँ, मन्सूख करने नहीं बल्कि पूरा करने आया हूँ। १८ क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, जब तक आस्मान और ज़मीन टल न जाएँ एक नुक्ता या एक शोशा तौरैत से हरगिज़ न टलेगा जब तक सब कुछ पूरा न हो जाए। १९ पस जो कोई इन छोटे से छोटे हुक्मों में

से किसी भी हुक्म को तोड़ेगा, और यही आदमियों को सिखाएगा। वो आसमान की बादशाही में सब से छोटा कहलाएगा; लेकिन जो उन पर अमल करेगा, और उन की ता'लीम देगा; वो आसमान की बादशाही में बड़ा कहलाएगा। २० क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि अगर तुम्हारी रास्तबाज़ी आलिमों और फ़रीसियों की रास्तबाज़ी से ज़्यादा न होगी, तो तुम आसमान की बादशाही में हरगिज़ दाखिल न होगे। २१ तुम सुन चुके हो कि अगलों से कहा गया था कि खून ना करना जो कोई खून करेगा वो अदालत की सज़ा के लायक होगा २२ लेकिन मैं तुम से ये कहता हूँ कि, जो कोई अपने भाई पर गुस्सा होगा, वो अदालत की सज़ा के लायक होगा; कोई अपने भाई को 'पागल कहेगा' वो सद्दे-ए अदालत की सज़ा के लायक होगा और जो उसको 'बेवकूफ कहेगा वो ज़हन्नुम की आग का सज़ावार होगा। २३ पस अगर तू कुर्बानगाह पर अपनी कुरबानी करता है और वहाँ तुझे याद आए कि मेरे भाई को मुझ से कुछ शिकायत है। २४ तो वहीं कुर्बानगाह के आगे अपनी नज़ छोड़ दे और जाकर पहले अपने भाई से मिलाप कर तब आकर अपनी कुर्बानी कर। २५ जब तक तू अपने मुद्'ई के साथ रास्ते में है, उससे जल्द सुलह कर ले, कहीं ऐसा न हो कि मुद्'ई तुझे मुन्सिफ़ के हावाले कर दे और मुन्सिफ़ तुझे सिपाही के हावाले कर दे; और तू कैद खाने में डाला जाए। २६ मैं तुझ से सच कहता हूँ, कि जब तक तू कौड़ी कौड़ी अदा न करेगा वहाँ से हरगिज़ न छूटेगा। २७ तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, 'ज़िना न करना। २८ लेकिन मैं तुम से ये कहता हूँ कि जिस किसी ने बुरी ख्वाहिश से किसी औरत पर निगाह की वो अपने दिल में उस के साथ ज़िना कर चुका। २९ पस अगर तेरी दहनी आँख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल कर अपने पास से फेंक दे; क्योंकि तेरे लिए यही बेहतर है; कि तेरे आ'ज़ा में से एक जाता रहे और तेरा सारा बदन जहन्नुम में न डाला जाए। ३० और अगर तेरा दाहिना हाथ

तुझे ठोकर खिलाए तो उस को काट कर अपने पास से फेंक दे। क्योंकि तेरे लिए यही बेहतर है; कि तेरे आज्ञा में से एक जाता रहे और तेरा सारा बदन जहन्नूम में न जाए। ३१ ये भी कहा गया था, जो कोई अपनी बीवी को छोड़े उसे तलाक नामा लिख दे। ३२ लेकिन मैं तुम से ये कहता हूँ, कि जो कोई अपनी बीवी को हरामकारी के सिवा किसी और वजह से छोड़ दे वो उस से ज़िना करता है; और जो कोई उस छोड़ी हुई से शादी करे वो भी ज़िना करता है। ३३ “ फिर तुम सुन चुके हो कि अगलों से कहा गया था ‘झूठी क्रसम न खाना; बल्कि अपनी क्रसमें “‘खुदावन्द’” के लिए पूरी करना।’ ” ३४ “ लेकिन मैं तुम से ये कहता हूँ कि बिल्कुल क्रसम न खाना ‘न तो आस्मान की ‘क्योंकि वो “‘खुदा’” का तरख्त है,’ ” ३५ न ‘ज़मीन की’ क्योंकि वो उस के पैरों की चौकी है। ‘न यरूशलीम की ‘क्योंकि वो बुजुर्ग बादशाह का शहर है। ३६ न अपने सर की क्रसम खाना क्योंकि तू एक बाल को भी सफ़ेद या काला नहीं कर सकता। ३७ बल्कि तुम्हारा कलाम ‘हाँ हाँ’ या ‘नहीं नहीं में’ हो क्योंकि जो इस से ज्यादा है वो बदी से है। ३८ तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, ‘आँख के बदले आँख, और दाँत के बदले दाँत।’ ३९ लेकिन मैं तुम से ये कहता हूँ कि शरीर का मुकाबला न करना बल्कि जो कोई तेरे दहने गाल पर तमाचा मारे दूसरा भी उसकी तरफ़ फेर दे। ४० और अगर कोई तुझ पर नालिश कर के तेरा कुर्ता लेना चाहे; तो चोगा भी उसे ले लेने दे। ४१ और जो कोई तुझे एक कोस बेगार में ले जाए; उस के साथ दो कोस चला जा। ४२ जो कोई तुझ से माँगे उसे दे; और जो तुझ से कर्ज़ चाहे उस से मुँह न मोड़। ४३ तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, ‘अपने पड़ोसी से मुहब्बत रख और अपने दुश्मन से दुश्मनी।’ ४४ लेकिन मैं तुम से ये कहता हूँ, अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखो और अपने सताने वालों के लिए दुआ करो। ४५ ताकि तुम अपने बाप के जो आसमान पर है, बेटे ठहरो; क्योंकि वो अपने सूरज को बदों और

नेकों दोनों पर चमकाता है; और रास्तबाज़ों और नारास्तों दोनों पर मेंह बरसाता है। ४६ क्योंकि अगर तुम अपने मुहब्बत रखने वालों ही से मुहब्बत रखो तो तुम्हारे लिए क्या अज़्र है? क्या महसूल लेने वाले भी ऐसा नहीं करते। ४७ अगर तुम सिर्फ अपने भाइयों को सलाम करो; तो क्या ज्यादा करते हो? क्या ग़ैर कौमों के लोग भी ऐसा नहीं करते? ४८ पस चाहिए कि तुम कामिल हो जैसा तुम्हारा आस्मानी बाप कामिल है।

६

१ खबरदार! अपने रास्तबाज़ी के काम आदमियों के सामने दिखावे के लिए न करो, नहीं तो तुम्हारे बाप के पास जो आसमान पर है; तुम्हारे लिए कुछ अज़्र नहीं है। २ पस जब तुम ख़ैरात करो तो अपने आगे नरसिंगा न बजाओ, जैसा रियाकार इबादतखनों और कूचों में करते हैं; ताकि लोग उनकी बड़ाई करें मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वो अपना अज़्र पा चुके। ३ बल्कि जब तू ख़ैरात करे तो जो तेरा दहना हाथ करता है; उसे तेरा बाँया हाथ न जाने। ४ ताकि तेरी ख़ैरात पोशीदा रहे, इस सूरत में तेरा बाप जो पोशीदगी में देखता है तुझे बदला देगा। ५ जब तुम दुआ करो तो रियाकारों की तरह न बनो; क्योंकि वो इबादतखानों में और बाज़ारों के मोड़ों पर खड़े होकर दुआ करना पसंद करते हैं; ताकि लोग उन को देखें; मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वो अपना बदला पा चुके। ६ बल्कि जब तू दुआ करे तो अपनी कोठरी में जा और दरवाज़ा बंद करके अपने बाप से जो पोशीदगी में है ; दुआ कर इस सूरत में तेरा बाप जो पोशीदगी में देखता है तुझे बदला देगा। ७ और दुआ करते वक़्त ग़ैर कौमों के लोगों की तरह बक बक न करो क्योंकि वो समझते हैं; कि हमारे बहुत बोलने की वजह से हमारी सुनी जाएगी। ८ पस उन की तरह न बनो; क्योंकि तुम्हारा बाप तुम्हारे माँगने से पहले ही जानता है कि तुम किन किन चीज़ों के मोहताज हो। ९ “ पस तुम इस तरह दुआ

किया करो, “” ऐ हमारे बाप, तू जो आसमान पर है तेरा नाम पाक माना जाए।” १० तेरी बादशाही आए। तेरी मर्जी जैसी आस्मान पर पूरी होती है ज़मीन पर भी हो। ११ हमारी रोज़ की रोटी आज हमें दे। १२ और जिस तरह हम ने अपने कुसूरवारों को मु'आफ़ किया है; तू भी हमारे कुसूरों को मु'आफ़ कर। १३ “ और हमें आजमाइश में न ला, बल्कि बुराई से बचा; क्योंकि बादशाही और कुदरत और जलाल हमेशा तेरे ही हैं; “” आमीन। “ १४ इसलिए कि अगर तुम आदमियों के कुसूर मु'आफ़ करोगे तो तुम्हारा आसमानी बाप भी तुम को मु'आफ़ करेगा। १५ और अगर तुम आदमियों के कुसूर मु'आफ़ न करोगे तो तुम्हारा आसमानी बाप भी तुम को मु'आफ़ न करेगा।। १६ जब तुम रोज़ा रखो तो रियाकारों की तरह अपनी सूरत उदास न बनाओ; क्योंकि वो अपना मुँह बिगाड़ते हैं; ताकि लोग उन को रोज़ादार जाने। मैं तुम से सच कहता हूँ कि वो अपना अज़्र पा चुके। १७ बल्कि जब तू रोज़ा रखे तो अपने सिर पर तेल डाल और मुँह धो। १८ ताकि आदमी नहीं बल्कि तेरा बाप जो पोशीदगी में है तुझे रोज़ादार जाने। इस सूरत में तेरा बाप जो पोशीदगी में देखता है तुझे बदला देगा। १९ अपने वास्ते ज़मीन पर माल जमा न करो, जहाँ पर कीड़ा और जंग ख़राब करता है; और जहाँ चोर नक़ब लगाते और चुराते हैं। २० बल्कि अपने लिए आसमान पर माल जमा करो; जहाँ पर न कीड़ा ख़राब करता है; न जंग और न वहाँ चोर नक़ब लगाते और चुराते हैं। २१ क्योंकि जहाँ तेरा माल है वहीं तेरा दिल भी लगा रहेगा। २२ बदन का चराग़ आँख है। पस अगर तेरी आँख दुरुस्त हो तो तेरा पूरा बदन रोशन होगा। २३ अगर तेरी आँख ख़राब हो तो तेरा सारा बदन तारीक होगा। पस अगर वो रोशनी जो तुझ में है तारीक हो तो तारीकी कैसी बड़ी होगी। २४ “ कोई आदमी दो मालिकों की ख़िदमत नहीं कर सकता; क्योंकि या तो एक से दुश्मनी रखे और दूसरे से मुहब्बत या एक से मिला रहेगा और दूसरे को

नाचीज़ जानेगा; तुम ““खुदा”” और दौलत दोनों की खिदमत नहीं कर सकते।” २५ इसलिए मैं तुम से कहता हूँ; कि अपनी जान की फ़िक्र न करना कि हम क्या खाएँगे या क्या पीएँगे, और न अपने बदन की कि क्या पहनेंगे; क्या जान खूराक से और बदन पोशाक से बढ़ कर नहीं। २६ हवा के परिन्दों को देखो कि न बोते हैं न काटते न कोठियों में जमा करते हैं; तोभी तुम्हारा आसमानी बाप उनको खिलाता है क्या तुम उस से ज्यादा क्रुद्र नहीं रखते? २७ तुम में से ऐसा कौन है जो फ़िक्र करके अपनी उम्र एक घड़ी भी बढ़ा सके? २८ और पोशाक के लिए क्यों फ़िक्र करते हो; जंगली सोसन के दरख्तों को ग़ौर से देखो कि वो किस तरह बढ़ते हैं; वो न मेहनत करते हैं न कातते हैं। २९ तोभी मैं तुम से कहता हूँ; कि सुलेमान भी बावजूद अपनी सारी शानो शौकत के उन में से किसी की तरह कपड़े पहने न था। ३० “ पस जब ““खुदा”” मैदान की घास को जो आज है और कल तंदूर में झोंकी जाएगी; ऐसी पोशाक पहनाता है, तो ““ऐ कम ईमान वालो “” तुम को क्यों न पहनाएगा?” ३१ “ “इस लिए फ़िक्रमन्द होकर ये न कहो ‘हम क्या खाएँगे ? या क्या पीएँगे ? या क्या पहनेंगे?’ ” ३२ क्योंकि इन सब चीज़ों की तलाश में ग़ैर कौमें रहती हैं; और तुम्हारा आसमानी बाप जानता है, कि तुम इन सब चीज़ों के मोहताज हो। ३३ बल्कि तुम पहले उसकी बादशाही और उसकी रास्बाज़ी की तलाश करो तो ये सब चीज़ें भी तुम को मिल जाएँगी। ३४ पस कल के लिए फ़िक्र न करो क्योंकि कल का दिन अपने लिए आप फ़िक्र कर लेगा; आज के लिए आज ही का दुःख काफ़ी है।

७

१ बुराई न करो, कि तुम्हारी भी बुराई न की जाए। २ क्योंकि जिस तरह तुम बुराई करते हो उसी तरह तुम्हारी भी बुराई की जाएगी और जिस पैमाने से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिए नापा जाएगा। ३ तू

क्यूँ अपने भाई की आँख के तिनके को देखता है और अपनी आँख के शहतीर पर गौर नहीं करता? ४ और जब तेरी ही आँख में शहतीर है तो तू अपने भाई से क्यूँ कर कह सकता है कि 'ला तेरी आँख में से तिनका निकाल दूँ।' ५ " "" ए रियाकार; पहले अपनी आँख में से तो शहतीर निकाल; फिर अपने भाई की आँख में से तिनके को अच्छी तरह देख कर निकाल सकता है।" ६ " "" पाक चीज़ कुत्तों को ना दो और अपने मोती सुअरोंके आगे न डालो; ऐसा न हो कि वो उनको पाँवों के तले रौंदें और पलट कर तुम को फाड़ें।" ७ माँगो तो तुम को दिया जाएगा। ढूँडो तो पाओगे; दरवाज़ा खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा। ८ क्यूँकि जो कोई माँगता है उसे मिलता है; और जो ढूँडता है वो पाता है और जो खटखटाता है उसके लिए खोला जाएगा। ९ तुम में ऐसा कौन सा आदमी है, कि अगर उसका बेटा उससे रोटी माँगे तो वो उसे पत्थर दे? १० या अगर मछली माँगे तो उसे साँप दे! ११ पस जबकि तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी चीज़ें देना जानते हो, तो तुम्हारा बाप जो आसमान पर है; अपने माँगने वालों को अच्छी चीज़ें क्यूँ न देगा। १२ पस जो कुछ तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें वही तुम भी उनके साथ करो; क्यूँकि तौरत और नबियों की ता'लीम यही है। १३ तंग दरवाज़े से दाखिल हो, क्यूँकि वो दरवाज़ा चौड़ा है, और वो रास्ता चौड़ा है जो हलाकत को पहुँचाता है; और उससे दाखिल होने वाले बहुत हैं। १४ क्यूँकि वो दरवाज़ा तंग है और वो रास्ता सुकड़ा है जो ज़िन्दगी को पहुँचाता है और उस के पाने वाले थोड़े हैं। १५ झूटे नबियों से खबरदार रहो! जो तुम्हारे पास भेड़ों के भेस में आते हैं; मगर अन्दर से फाड़ने वाले भेड़िये की तरह हैं। १६ उनके फलों से तुम उनको पहचान लो; क्या झाड़ियों से अंगूर या ऊँट कटारों से अंजीर तोड़ते हैं? १७ इसी तरह हर एक अच्छा दरख्त अच्छा फल लाता है और बुरा दरख्त बुरा फल लाता है। १८ अच्छा दरख्त बुरा फल

नहीं ला सकता, न बुरा दरख्त अच्छा फल ला सकता है। १९ जो दरख्त अच्छा फल नहीं लाता वो काट कर आग में डाला जाता है। २० पस उनके फलों से तुम उनको पहचान लोगे। २१ जो मुझ से 'ऐ खुदावन्द, ऐ खुदावन्द' कहते हैं उन में से हर एक आस्मान की बादशाही में दाखिल न होगा। मगर वही जो मेरे आस्मानी बाप की मर्जी पर चलता है। २२ उस दिन बहुत से मुझसे कहेंगे, 'ऐ खुदावन्द, खुदावन्द! क्या हम ने तेरे नाम से नबुव्वत नहीं की, और तेरे नाम से बदरुहों को नहीं निकाला और तेरे नाम से बहुत से मोजिजे नहीं दिखाए?' २३ उस दिन मैं उन से साफ़ कह दूँगा, 'मेरी तुम से कभी वाकफ़ियत न थी, ऐ बदकारो! मेरे सामने से चले जाओ।' २४ पस जो कोई मेरी यह बातें सुनता और उन पर अमल करता है वह उस अक्लमन्द आदमी की तरह ठहरेगा जिस ने चट्टान पर अपना घर बनाया। २५ और मेंह बरसा और पानी चढ़ा और आन्धियाँ चलीं और उस घर पर टक्करे लगीं; लेकिन वो न गिरा क्योंकि उस की बुन्याद चट्टान पर डाली गई थी। २६ और जो कोई मेरी यह बातें सुनता है और उन पर अमल नहीं करता वह उस बेवकूफ़ आदमी की तरह ठहरेगा जिस ने अपना घर रेत पर बनाया। २७ और मेंह बरसा और पानी चढ़ा और आन्धियाँ चलीं; और उस घर को सदमा पहुँचा और वो गिर गया; और बिल्कुल बर्बाद हो गया।" २८ जब ईसा' ने यह बातें खत्म कीं तो ऐसा हुआ कि भीड़ उस की तालीम से हैरान हुई। २९ क्योंकि वह उन के आलिमों की तरह नहीं बल्कि साहिब- ऐ- इख्तियार की तरह उनको ता'लीम देता था।

८

१ जब वो उस पहाड़ से उतरा तो बहुत सी भीड़ उस के पीछे हो ली। २ " और देखो : एक कोढ़ी ने पास आकर उसे सज्दा किया और कहा, "" ऐ खुदावन्द अगर तू चाहे तो मुझे पाक साफ़ कर सकता है। "" ३ उसने हाथ बढ़ा कर उसे छुआ और कहा, "मैं चाहता हूँ, तू पाक-साफ़ हो जा।" वह फ़ौरन कोढ़ से पाक-साफ़ हो गया। ४ ईसा'

ने उस से कहा, “खबरदार! किसी से न कहना बल्कि जाकर अपने आप को काहिन को दिखा; और जो नज़्र मूसा ने मुकर्रर की है उसे गुजरान ; ताकि उन के लिए गवाही हो।” ५ जब वो कफ़र्नहूम में दाखिल हुआ तो एक सूबेदार उसके पास आया; और उसकी मिन्नत करके कहा। ६ “ऐ खुदावन्द, मेरा खादिम फ़ालिज का मारा घर में पड़ा है; और बहुत ही तक्लीफ़ में है।” ७ उस ने उस से कहा, “मैं आ कर उसे शिफ़ा दूंगा।” ८ सूबेदार ने जवाब में कहा “ऐ खुदावन्द, मैं इस लायक नहीं कि तू मेरी छत के नीचे आए; बल्कि सिर्फ़ ज़बान से कह दे तो मेरा खादिम शिफ़ा पाएगा। ९ क्योंकि मैं भी दूसरे के इस्लितयार में हूँ; और सिपाही मेरे मातहत हैं; जब एक से कहता हूँ, ‘जा!’ तो वह जाता है और दूसरे से ‘आ!’ तो वह आता है। और अपने नौकर से ‘ये कर’ तो वह करता है।” १० ईसा' ने ये सुनकर त'अज्जुब किया और पीछे आने वालों से कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि मैं ने इस्राईल में भी ऐसा ईमान नहीं पाया। ११ और मैं तुम से कहता हूँ कि बहुत सारे पूरब और पश्चिम से आ कर अब्राहम, इज़हाक़ और याक़ूब के साथ आस्मान की बादशाही की दावत में शरीक होंगे। १२ मगर बादशाही के बेटे बाहर अंधेरे में डाले जायगें; जहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।” १३ “और ईसा' ने सूबेदार से कहा “जा, जैसा तू ने यक्कीन किया तेरे लिए वैसा ही हो।” और उसी घड़ी खादिम ने शिफ़ा पाई।” १४ और ईसा' ने पतरस के घर में आकर उसकी सास को बुखार में पड़ी देखा। १५ उस ने उसका हाथ छुआ और बुखार उस पर से उतर गया ; और वो उठ खड़ी हुई और उसकी खिदमत करने लगी। १६ जब शाम हुई तो उसके पास बहुत से लोगों को लाए; जिन में बदरूहें थी उसने बदरूहों को ज़बान ही से कह कर निकाल दिया; और सब बीमारों को अच्छा कर दिया। १७ ताकि जो यसायाह नबी के जरिये कहा गया था, वो पूरा हो: “उसने आप हमारी कमज़ोरियाँ ले लीं और बीमारियाँ उठा लीं।” १८ जब ईसा' ने

अपने चारो तरफ बहुत सी भीड़ देखी तो पार चलने का हुक्म दिया। १९ और एक आलिम ने पास आकर उस से कहा “ऐ उस्ताद, जहाँ कहीं भी तू जाएगा मैं तेरे पीछे चलूँगा।” २० ईसा' ने उस से कहा; लोमड़ियों के भट होते हैं और हवा के परिन्दों के घोंसले; मगर इबने आदम के लिए सर रखने की भी जगह नहीं।” २१ एक और शागिर्द ने उस से कहा, “ऐ खुदावन्द, मुझे इजाज़त दे कि पहले जाकर अपने बाप को दफ़न करूँ।” २२ ईसा' ने उससे कहा तू मेरे पीछे चल और मुर्दों को अपने मुर्दे दफ़न करने दे।” २३ जब वो नाव पर चढ़ा तो उस के शागिर्द उसके साथ हो लिए। २४ और देखो झील में ऐसा बड़ा तूफ़ान आया कि नाव लहरों से छिप गई, मगर वो सोता रहा | २५ उन्होंने पास आकर उसे जगाया और कहा “ऐ खुदावन्द, हमें बचा, हम हलाक हुए जाते हैं”। २६ उसने उनसे कहा “ऐ कम ईमान वालो ! डरते क्यों हो?” तब उसने उठकर हवा और पानी को डाँटा और बड़ा अम्म हो गया। २७ और लोग ता' अज्जुब करके कहने लगे “ये किस तरह का आदमी है कि हवा और पानी सब इसका हुक्म मानते हैं।” २८ जब वो उस पार गदरीनियों के मुल्क में पहुँचा तो दो आदमी जिन में बदरूहें थी; क़ब्रों से निकल कर उससे मिले: वो ऐसे तंग मिज़ाज थे कि कोई उस रास्ते से गुज़र नहीं सकता था। २९ “ और देखो उन्होंने चिल्लाकर कहा “ऐ ““खुदा”” के बेटे हमें तुझ से क्या काम? क्या तू इसलिए यहाँ आया है कि वक़्त से पहले हमें अज़ाब में डाले?”” ३० उनसे कुछ दूर बहुत से सूअरों का ग़ोल चर रहा था। ३१ पस बदरूहों ने उसकी मिन्नत करके कहा “अगर तू हम को निकालता है तो हमें सूअरों के ग़ोल में भेज दे।” ३२ उसने उनसे कहा “जाओ।” वो निकल कर सूअरों के अन्दर चली गई; और देखो; सारा ग़ोल किनारे पर से झपट कर झील में जा पड़ा और पानी में डूब मरा। ३३ और चराने वाले भागे और शहर में जाकर सब माजरा और उनके हालात जिन में बदरूहें थी बयान किया। ३४ और देखो सारा शहर ईसा' से मिलने को निकला और उसे देख कर मिन्नत की,

कि हमारी सरहदों से बाहर चला जा।

९

१ फिर वो नाव पर चढ़ कर पार गया; और अपने शहर में आया।
 २ और देखो, लोग एक फालिज़ मारे हुए को जो चारपाई पर पड़ा हुआ था उसके पास लाए; ईसा' ने उसका ईमान देखकर मफ़लूज से कहा “बेटा, इत्मीनान रख। तेरे गुनाह मुआफ़ हुए।” ३ और देखो कुछ आलिमों ने अपने दिल में कहा “ये कुफ़्र बकता है” ४ ईसा' ने उनके ख्याल मा'लूम करके कहा; तुम क्यों अपने दिल में बुरे ख्याल लाते हो? ५ “आसान क्या है? ये कहना तेरे गुनाह मुआफ़ हुए; या ये कहना; उठ और चल फिर।” ६ लेकिन इसलिए कि तुम जान लो कि इबने आदम को ज़मीन पर गुनाह मुआफ़ करने का इख़्तियार है” उसने फालिज़ मारे हुए से कहा “उठ, अपनी चारपाई उठा और अपने घर चला जा।” ७ वो उठ कर अपने घर चला गया।
 ८ “लोग ये देख कर डर गए; और “खुदा” की बड़ाई करने लगे; जिसने आदमियों को ऐसा इख़्तियार बरूशा।” ९ “ईसा' ने वहाँ से आगे बढ़कर मत्ती नाम एक शरूस् को महसूल की चौकी पर बैठे देखा; और उस से कहा, “मेरे पीछे हो ले।” वो उठ कर उसके पीछे हो लिया।” १० “जब वो घर में खाना खाने बैठे; तो ऐसा हुआ कि बहुत से महसूल लेने वाले और गुनहगार आकर “ईसा” और उसके शागिर्दों के साथ खाना खाने बैठे।” ११ फ़रीसियों ने ये देख कर उसके शागिर्दों से कहा “तुम्हारा उस्ताद महसूल लेने वालों और गुनहगारों के साथ क्यों खाता है? १२ उसने ये सुनकर कहा “तंदरूस्तों को हकीम की ज़रूरत नहीं बल्कि बीमारों को। १३ मगर तुम जाकर उसके मा'ने मा'लूम करो 'मैं कुर्बानी नहीं बल्कि रहम पसन्द करता हूँ।' क्योंकि मैं रास्तबाज़ों को नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ।” १४ उस वक़्त यूहन्ना के शागिर्दों ने उसके पास आकर कहा “क्या वजह है कि हम और फ़रीसी तो अक्सर रोज़ा रखते हैं, और तेरे शागिर्द रोज़ा नहीं रखते?” १५ ईसा' ने उस से कहा

क्या बाराती जब तक दुल्हा उनके साथ है, मातम कर सकते हैं? मगर वो दिन आएँगे; कि दुल्हा उनसे जुदा किया जाएगा; उस वक़्त वो रोज़ा रखेंगे। १६ कोरे कपड़े का पैवंद पुरानी पोशाक में कोई नहीं लगाता क्योंकि वो पैवंद पोशाक में से कुछ खींच लेता है और वो ज्यादा फट जाती है। १७ और नई मय पुरानी मशकों में नहीं भरते वरना मशकें फट जाती हैं; और मय बह जाती है, और मशकें बर्बाद हो जाती हैं; बल्कि नई मय नई मशको में भरते हैं; और वो दोनों बची रहती हैं।” १८ “वो उन से ये बातें कह ही रहा था, कि देखो एक सरदार ने आकर उसे सज्दा किया और कहा “मेरी बेटी अभी मरी है लेकिन तू चलकर अपना हाथ उस पर रख तो वो ज़िन्दा हो जाएगी।” १९ ईसा' उठ कर अपने शागिर्दों समेत उस के पीछे हो लिया। २० और देखो; एक औरत ने जिसके बारह बरस से खून जारी था; उसके पीछे आकर उस की पोशाक का किनारा छुआ। २१ क्योंकि वो अपने जी में कहती थी; अगर सिर्फ़ उसकी पोशाक ही छू लूँगी “तो अच्छी हो जाऊँगी।” २२ “ईसा' ने फिर कर उसे देखा और कहा, “बेटी, इत्मिनान रख।” तेरे ईमान ने तुझे अच्छा कर दिया पस वो औरत उसी घड़ी अच्छी हो गई।” २३ जब ईसा' सरदार के घर में आया और बाँसुरी बजाने वालों को और भीड़ को शोर मचाते देखा। २४ तो कहा, “हट जाओ! क्योंकि लड़की मरी नहीं बल्कि सोती है।” वो उस पर हँसने लगे। २५ मगर जब भीड़ निकाल दी गई तो उस ने अन्दर जाकर उसका हाथ पकड़ा और लड़की उठी। २६ और इस बात की शोहरत उस तमाम इलाके में फैल गई। २७ जब ईसा' वहाँ से आगे बढ़ा तो दो अन्धे उसके पीछे ये पुकारते हुए चले “ऐ इब्न-ए-दाऊद, हम पर रहम कर।” २८ जब वो घर में पहुँचा तो वो अन्धे उसके पास आए और 'ईसा' ने उनसे कहा “क्या तुम को यक़ीन है कि मैं ये कर सकता हूँ?” उन्होंने ने उस से कहा “हां खुदावन्द।” २९ फिर उस ने उन की आँखें छू कर कहा, “तुम्हारे यक़ीन के मुताबिक़ तुम्हारे लिए हो।” ३० और उन की आँखें खुल

गई और ईसा' ने उनको ताकीद करके कहा, “खबरदार, कोई इस बात को न जाने!” ३१ मगर उन्होंने निकल कर उस तमाम इलाके में उसकी शोहरत फैला दी। ३२ जब वो बाहर जा रहे थे, तो देखो लोग एक गूँगे को जिस में बदरूह थी उसके पास लाए। ३३ “ और जब वो बदरूह निकाल दी गई तो गूँगा बोलने लगा; और लोगों ने ता'अज्जुब करके कहा “” इस्राईल में ऐसा कभी नहीं देखा गया।”” ३४ मगर फ़रीसियों ने कहा “ये तो बदरूहों के सरदार की मदद से बदरूहों को निकालता है।” ३५ ईसा' सब शहरों और गाँव में फिरता रहा, और उनके इबादतख़ानों में ता'लीम देता और बादशाही की खुशख़बरी का एलान करता और और हर तरह की बीमारी और हर तरह की कमज़ोरी दूर करता रहा। ३६ और जब उसने भीड़ को देखा तो उस को लोगों पर तरस आय; क्यूँकि वो उन भेड़ों की तरह थे जिनका चरवाहा न हो बुरी हालत में पड़े थे। ३७ उस ने अपने शागिर्दों से कहा, “फ़सल बहुत है, लेकिन मज़दूर थोड़े हैं। ३८ फ़सल के मालिक से मिन्नत करो कि वो अपनी फ़सल काटने के लिए मज़दूर भेज दें।”

१०

१ फिर उस ने अपने बारह शागिर्दों को पास बुला कर उनको बदरूहों पर इस्लितयार बस्लशा कि उनको निकालें और हर तरह की बीमारी और हर तरह की कमज़ोरी को दूर करें। २ और बारह रसूलों के नाम ये हैं; पहला शमा'ऊन, जो पतरस कहलाता है और उस का भाई अन्द्रियास ज़बदी का बेटा या'कूब और उसका भाई यूहन्ना। ३ फ़िलिप्पुस, बरतुल्माई, तोमा, और मत्ती महसूल लेने वाला। ४ हल्फ़ई का बेटा या'कूब और तद्दी शमा'ऊन कनानी और यहूदाह इस्करियोती जिस ने उसे पकड़वा भी दिया।” ५ “ इन बारह को ईसा' ने भेजा और उनको हुक्म देकर कहा “”ग़ैर कौमों की तरफ़ न जाना “” और सामरियों के किसी शहर में भी दाख़िल न होना। “ ६ बल्कि इस्राईल के घराने की खोई हुई भेड़ों के पास जाना। ७ और

चलते चलते ये एलान करना आस्मान की बादशाही नज़दीक आ गई है।^८ बीमारों को अच्छा करना; मुर्दों को जिलाना कोढ़ियों को पाक साफ़ करना बदरूहों को निकालना; तुम ने मुफ़्त पाया मुफ़्त ही देना।^९ न सोना अपने कमरबन्द में रखना -न चाँदी और न पैसे।^{१०} रास्ते के लिए न झोली लेना न दो दो कुर्ते न जूतियाँ न लाठी; क्योंकि मज़दूर अपनी ख़ूराक का हक़दार है।^{११} जिस शहर या गाँव में दाख़िल हो मालूम करना कि उस में कौन लायक है और जब तक वहाँ से रवाना न हो उसी के यहाँ रहना।^{१२} और घर में दाख़िल होते वक़्त उसे दु'आ -ऐ ख़ैर देना।^{१३} अगर वो घर लायक हो तो तुम्हारा सलाम उसे पहुँचे; और अगर लायक न हो तो तुम्हारा सलाम तुम पर फिर आए।^{१४} और अगर कोई तुम को कुबूल न करे, और तुम्हारी बातें न सुने तो उस घर या शहर से बाहर निकलते वक़्त अपने पैरों की धूल झाड़ देना।^{१५} मैं तुम से सच कहता हूँ, कि अदालत के दिन उस शहर की निस्बत सद्म और अमूरा के इलाक़े का हाल ज्यादा काबिल-ए-बर्दाश्त के लायक होगा।^{१६} देखो, मैं तुम को भेजता हूँ; गोया भेड़ों को भेड़ियों के बीच पस साँपों की तरह होशियार और कबूतरों की तरह सीधे बनो।^{१७} मगर आदमियों से ख़बरदार रहो, क्योंकि वह तुम को अदालतों के हवाले करेंगे; और अपने इबादतख़ानों में तुम को कोड़े मारेंगे।^{१८} और तुम मेरी वज़ह से हाकिमों और बादशाहों के सामने हाज़िर किए जाओगे; ताकि उनके और ग़ैर कौमों के लिए गवाही हो।^{१९} लेकिन जब वो तुम को पकड़वाएँगे; तो फ़िक्र न करना कि हम किस तरह कहें या क्या कहें; क्योंकि जो कुछ कहना होगा उसी वक़्त तुम को बताया जाएगा।^{२०} क्योंकि बोलने वाले तुम नहीं बल्कि तुम्हारे बाप का रूह है; जो तुम में बोलता है।^{२१} “ “” भाई को भाई क़त्ल के लिए हवाले करेगा और बेटे को बाप और बेटा अपने माँ बाप के बरख़िलाफ़ खड़े होकर उनको मरवा डालेंगे।”^{२२} और मेरे नाम के ज़रिए से सब लोग तुम से अदावत रखेंगे; मगर जो आख़िर तक

बर्दाश्त करेगा वही नजात पाएगा। २३ “लेकिन जब तुम को एक शहर सताए तो दूसरे को भाग जाओ; क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, कि तुम इस्राईल के सब शहरों में न फिर चुके होगे कि “इब्न-ए-आदम आजाएगा।”” २४ शागिर्द अपने उस्ताद से बड़ा नहीं होता, न नौकर अपने मालिक से। २५ शागिर्द के लिए ये काफ़ी है कि अपने उस्ताद की तरह हो; और नौकर के लिए ये कि अपने मालिक की तरह जब उन्होंने घर के मालिक को बा'लज़बूल कहा; तो उसके घराने के लोगों को क्यों न कहेंगे। २६ पस उनसे न डरो; क्योंकि कोई चीज़ ढकी नहीं जो खोली न जाएगी और न कोई चीज़ छिपी है जो जानी न जाएगी। २७ जो कुछ मैं तुम से अन्धेरे में कहता हूँ; उजाले में कहो और जो कुछ तुम कान में सुनते हो छतो पर उसका एलान करो। २८ जो बदन को क़त्ल करते हैं और रूह को क़त्ल नहीं कर सकते उन से न डरो बल्कि उसी से डरो जो रूह और बदन दोनों को जहन्नूम में हलाक कर सकता है। २९ क्या पैसे की दो चिड़ियाँ नहीं बिकती? और उन में से एक भी तुम्हारे बाप की मर्ज़ी के बग़ैर ज़मीन पर नहीं गिर सकती। ३० बल्कि तुम्हारे सर के बाल भी सब गिने हुए हैं। ३१ पस डरो नहीं; तुम्हारी क़द्र तो बहुत सी चिड़ियों से ज्यादा है। ३२ पस जो कोई आदमियों के सामने मेरा इक्कार करेगा; मैं भी अपने बाप के सामने जो आसमान पर है उसका इक्कार करूँगा। ३३ मगर जो कोई आदमियों के सामने मेरा इन्कार करेगा मैं भी अपने बाप के जो आस्मान पर है उसका इन्कार करूँगा। ३४ ये न समझो कि मैं ज़मीन पर सुलह करवाने आया हूँ; सुलह करवाने नहीं बल्कि तलवार चलावाने आया हूँ। ३५ क्योंकि मैं इसलिए आया हूँ, कि आदमी को उसके बाप से और बेटी को उस की माँ से और बहू को उसकी सास से जुदा कर दूँ। ३६ और आदमी के दुश्मन उसके घर के ही लोग होंगे। ३७ “” जो कोई बाप या माँ को मुझ से ज्यादा अज़ीज़ रखता है वो मेरे लायक नहीं; और जो कोई बेटे या बेटी को मुझ से ज्यादा अज़ीज़ रखता है वो मेरे लायक नहीं।” ३८ जो कोई

अपनी सलीब न उठाए और मेरे पीछे न चले वो मेरे लायक नहीं।^{३९} जो कोई अपनी जान बचाता है उसे खोएगा; और जो कोई मेरी खातिर अपनी जान खोता है उसे बचाएगा।^{४०} जो तुम को कुबूल करता है वो मुझे कुबूल करता है और जो मुझे कुबूल करता है वो मेरे भेजने वाले को कुबूल करता है।^{४१} जो नबी के नाम से नबी को कुबूल करता है; वो नबी का अज्र पाएगा; और जो रास्तबाज़ के नाम से रास्तबाज़ को कुबूल करता है वो रास्तबाज़ का अज्र पाएगा।^{४२} और जो कोई शागिर्द के नाम से इन छोटों में से किसी को सिर्फ़ एक प्याला ठंडा पानी ही पिलाएगा; मैं तुम से सच कहता हूँ वो अपना अज्र हरगिज़ न खोएगा।”

११

१ जब ईसा' अपने बारह शागिर्दों को हुक्म दे चुका, तो ऐसा हुआ कि वहाँ से चला गया ताकि उनके शहरों में ता'लीम दे और एलान करे।^२ यूहन्ना ने कैदखाने में मसीह के कामों का हाल सुनकर अपने शागिर्दों के ज़रिये उससे पुछवा भेजा।^३ आने वाला तू ही है “या हम दूसरे की राह देखें?”^४ ईसा' ने जवाब में उनसे कहा, “जो कुछ तुम सुनते हो और देखते हो जाकर यूहन्ना से बयान कर दो।^५ ‘कि अन्धे देखते और लंगड़े चलते फिरते हैं; कोढ़ी पाक साफ़ किए जाते हैं और बहरे सुनते हैं और मुर्दे ज़िन्दा किए जाते हैं और गरीबों को खुशखबरी सुनाई जाती है।’^६ और मुबारक वो है जो मेरी वजह से ठोकर न खाए।”^७ जब वो रवाना हो लिए तो ईसा' ने यूहन्ना के बारे में लोगों से कहना शुरू किया कि “तुम वीरान में क्या देखने गए थे? क्या हवा से हिलते हुए सरकंडे को? ^८ तो फिर क्या देखने गए थे क्या महीन कपड़े पहने हुए शरूस् को? देखो जो महीन कपड़े पहनते हैं वो बादशाहों के घरों में होते हैं।^९ तो फिर क्यों गए थे? क्या एक नबी को देखने? हाँ मैं तुम से कहता हूँ बल्कि नबी से बड़े को।^{१०} ये वही है जिसके बारे में लिखा है कि ‘देख मैं अपना

पैगम्बर तेरे आगे भेजता हूँ जो तेरा रास्ता तेरे आगे तैयार करेगा' ११ मैं तुम से सच कहता हूँ; जो औरतों से पैदा हुए हैं, उन में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से बड़ा कोई नहीं हुआ, लेकिन जो आसमान की बादशाही में छोटा है वो उस से बड़ा है। १२ और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के दिनों से अब तक आसमान की बादशाही पर जो होता रहा है; और ताकतवर उसे छीन लेते हैं। १३ क्योंकि सब नबियों और तौरत ने यूहन्ना तक नबुव्वत की। १४ और चाहो तो मानो; एलिया जो आनेवाला था; यही है। १५ जिसके सुनने के कान हों वो सुन ले! १६ पस इस ज़माने के लोगों को मैं किस की मिसाल दूँ? वो उन लड़कों की तरह हैं, जो बाज़ारों में बैठे हुए अपने साथियों को पुकार कर कहते हैं। १७ 'हम ने तुम्हारे लिए बाँसुली बजाई और तुम न नाचे। हम ने मातम किया और तुम ने छाती न पीटी' १८ क्योंकि यूहन्ना न खाता आया न पीता और वो कहते हैं उस में बदरूह है। १९ इब्न-ए-आदम खाता पीता आया। और वो कहते हैं, 'देखो खाऊ और शराबी आदमी महसूल लेने वालों और गुनाहगारों का यार। मगर हिक्मत अपने कामों से रास्त साबित हुई है।" २० वो उस वक़्त उन शहरों को मलामत करने लगा जिनमें उसके अकसर मो'जिज़े ज़ाहिर हुए थे; क्योंकि उन्होंने तौबा न की थी। २१ "ए खुराज़ीन, तुझ पर अफ़सोस ! ऐ बैत-सैदा, तुझ पर अफ़सोस ! क्योंकि जो मोजिज़े तुम में हुए अगर सूर और सैदा में होते तो वो टाट ओढ़ कर और खाक में बैठ कर कब के तौबा कर लेते। २२ मैं तुम से सच कहता हूँ; कि अदालत के दिन सूर और सैदा के हाल से ज्यादा बर्दाश्त के लायक़ होगा। २३ और ऐ कफ़रनहूम, क्या तू आस्मान तक बुलन्द किया जाएगा? तू तो आलम -ए अर्वाह में उतरेगा क्योंकि जो मो'जिज़े तुम में ज़ाहिर हुए अगर सदूम में होते तो आज तक क़ायम रहता। २४ मगर मैं तुम से कहता हूँ कि अदालत के दिन सदूम के इलाक़े का हाल तेरे हाल से ज्यादा बर्दाश्त के लायक़ होगा।" २५ उस वक़्त

ईसा' ने कहा, “ऐ बाप, आस्मान-ओ-ज़मीन के खुदावन्द मैं तेरी हम्द करता हूँ कि तू ने यह बातें समझदारों और अक़लमन्दों से छिपाई और बच्चों पर ज़ाहिर कीं। २६ हाँ ऐ बाप!, क्योंकि ऐसा ही तुझे पसन्द आया। २७ मेरे बाप की तरफ़ से सब कुछ मुझे सौंपा गया और कोई बेटे को नहीं जानता सिवा बाप के और कोई बाप को नहीं जानता सिवा बेटे के और उसके जिस पर बेटा उसे ज़ाहिर करना चाहे। २८ 'ऐ मेहनत उठाने वालो और बोझ से दबे हुए लोगो, सब मेरे पास आओ! मैं तुम को आराम दूँगा। २९ मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो और मुझ से सीखो, क्योंकि मैं हलीम हूँ और दिल का फ़िरोतन तो तुम्हारी जानें आराम पाएँगी, ३० क्योंकि मेरा जूआ मुलायम है और मेरा बोझ हल्का।”

१२

१ उस वक़्त ईसा' सबत के दिन खेतों में हो कर गया, और उसके शागिर्दों को भूक लगी और वो बालियां तोड़ तोड़ कर खाने लगे। २ फ़रीसियों ने देख कर उससे कहा “देख तेरे शागिर्द वो काम करते हैं जो सबत के दिन करना जायज नहीं।” ३ उसने उनसे कहा “क्या तुम ने ये नहीं पढ़ा कि जब दाऊद और उस के साथी भूके थे; तो उसने क्या किया? ४ “ वो क्यूँकर ““खुदा”” के घर में गया और नज़ की रोटियाँ खाईं जिनको खाना उसको जायज न था; न उसके साथियों को मगर सिर्फ़ काहिनों को? “ ५ क्या तुम ने तौरैत में नहीं पढ़ा कि काहिन सबत के दिन हैकल में सबत की बेहुरमती करते हैं; और बेकुसूर रहते हैं? ६ लेकिन मैं तुम से कहता हूँ कि यहाँ वो है जो हैकल से भी बड़ा है। ७ लेकिन अगर तुम इसका मतलब जानते कि , मैं कुर्बानी नहीं बल्कि रहम पसन्द करता हूँ। तो बेकुसूरों को कुसूरवार न ठहराते। ८ क्यूँकि इब्न-ए-आदम सबत का मालिक है।” ९ वो वहाँ से चलकर उन के इबादतख़ाने में गया। १० और देखो; वहाँ एक आदमी था जिस का हाथ सूखा हुआ था उन्होंने

उस पर इल्ज़ाम लगाने के इरादे से ये पुछा।?”क्या सबत के दिन शिफा देना जायज हैं ११ उसने उनसे कहा “तुम में ऐसा कौन है जिसकी एक भेड़ हो और वो सबत के दिन गड्ढे में गिर जाए तो वो उसे पकड़कर न निकाले? १२ पस आदमी की कद्र तो भेड़ से बहुत ही ज़्यादा है; इसलिए सबत के दिन नेकी करना जायज़ है।” १३ तब उसने उस आदमी से कहा “अपना हाथ बढ़ा।” उस ने बढ़ाया और वो दूसरे हाथ की तरह दुरुस्त हो गया। १४ इस पर फ़रीसियों ने बाहर जाकर उसके बरखिलाफ़ मशवरा किया कि उसे किस तरह हलाक़ करें। १५ ईसा' ये म'लूम करके वहाँ से रवाना हुआ; और बहुत से लोग उसके पीछे हो लिए और उसने सब को अच्छा कर दिया। १६ और उनको ताकीद की, “कि मुझे ज़ाहिर न करना।” १७ ताकि जो यसायाह नबी की मा'अरफ़त कहा गया था वो पूरा हो। १८ ‘देखो, ये मेरा ख़ादिम है जिसे मैं ने चुना मेरा प्यारा जिससे मेरा दिल खुश है। मैं अपना रूह इस पर डालूँगा, और ये ग़ैर कौमों को इन्साफ़ की ख़बर देगा। १९ ये न झगड़ा करेगा न शोर, और न बाज़ारों में कोई इसकी आवाज़ सुनेगा। २० ये कुचले हुए सरकन्डे को न तोड़ेगा और धुवाँ उठते हुए सन को न बुझाएगा; जब तक कि इन्साफ़ की फ़तह न कराए। २१ और इसके नाम से ग़ैर क़ौमों उम्मीद रखेंगी।’ २२ उस वक़्त लोग उसके पास एक अंधे गूंगे को लाए; उसने उसे अच्छा कर दिया चुनाचे वो गूँगा बोलने और देखने लगा। २३ “सारी भीड़ हैरान होकर कहने लगी; क्या ये इब्न-ए- आदम है?” २४ फ़रीसियों ने सुन कर कहा, “ये बदरूहों के सरदार बा'लज़बूल की मदद के बग़ैर बदरूहों को नहीं निकालता।” २५ उसने उनके ख़यालों को जानकर उनसे कहा “जिस बादशाही में फ़ूट पड़ती है वो वीरान हो जाती है और जिस शहर या घर में फ़ूट पड़ेगी वो कायम न रहेगा। २६ और अगर शैतान ही शैतान को निकाले तो वो आप ही अपना मुख़ालिफ़ हो गया; फिर उसकी बादशाही क्यूँकर कायम रहेगी? २७ अगर मैं बा'लज़बूल की मदद से बदरूहों को निकालता

हूँ तो तुम्हारे बेटे किस की मदद से निकालते हैं? पस वही तुम्हारे मुन्सिफ़ होंगे। २८ “लेकिन अगर मैं “खुदा” के रूह की मदद से बदरूहों को निकालता हूँ तो “खुदा” की बादशाही तुम्हारे पास आ पहुँची।” २९ या क्यूँकर कोई आदमी किसी ताक़तवर के घर में घुस कर उसका माल लूट सकता है; जब तक कि पहले उस ताक़तवर को न बाँध ले? फिर वो उसका घर लूट लेगा। ३० जो मेरे साथ नहीं वो मेरे खिलाफ़ है और जो मेरे साथ जमा नहीं करता वो बिखेरता है। ३१ इसलिए मैं तुम से कहता हूँ कि आदमियों का हर गुनाह और कुफ़्र तो मुआफ़ किया जाएगा; मगर जो कुफ़्र रूह के हक़ में हो वो मुआफ़ न किया जाएगा। ३२ और जो कोई इब्न-ए-आदम के खिलाफ़ कोई बात कहेगा वो तो उसे मुआफ़ की जाएगी; मगर जो कोई रूह-उल-कुदूस के खिलाफ़ कोई बात कहेगा; वो उसे मुआफ़ न की जाएगी न इस आलम में न आने वाले में। ३३ या तो दरख़्त को भी अच्छा कहो; और उसके फ़ल को भी अच्छा, या दरख़्त को भी बुरा कहो और उसके फ़ल को भी बुरा; क्यूँकि दरख़्त फ़ल से पहचाना जाता है। ३४ ऐ साँप के बच्चो! तुम बुरे होकर क्यूँकर अच्छी बातें कह सकते हो? क्यूँकि जो दिल में भरा है वही मुँह पर आता है। ३५ अच्छा आदमी अच्छे ख़ज़ाने से अच्छी चीज़ें निकालता है; बुरा आदमी बुरे ख़ज़ाने से बुरी चीज़ें निकालता है। ३६ मैं तुम से कहता हूँ; कि जो निकम्मी बात लोग कहेंगे; अदालत के दिन उसका हिसाब देंगे। ३७ क्यूँकि तू अपनी बातों की वजह से रास्तबाज़ ठहराया जाएगा; और अपनी बातों की वजह से कुसूरवार ठहराया जाएगा।” ३८ “इस पर कुछ आलिमों और फ़रीसियों ने जवाब में उससे कहा; “ऐ उस्ताद हम तुझ से एक निशान देखना चाहते हैं।” ३९ उस ने जवाब देकर उनसे कहा; इस ज़माने के बुरे और ज़िनाकार लोग निशान तलब करते हैं; मगर यूनाह नबी के निशान के सिवा कोई और निशान उनको न दिया

जाएगा। ४० क्योंकि जैसे यूनाह तीन रात तीन दिन मछली के पेट में रहा; वैसे ही इबने आदम तीन रात तीन दिन ज़मीन के अन्दर रहेगा। ४१ निनवे के लोग अदालत के दिन इस ज़माने के लोगों के साथ खड़े होकर इनको मुजरिम ठहराएँगे; क्योंकि उन्होंने यूनाह के एलान पर तौबा कर ली; और देखो, यह वो है जो यूनाह से भी बड़ा है। ४२ दक्खिन की मलिका, अदालत के दिन इस ज़माने के लोगों के साथ उठकर इनको मुजरिम ठहराएगी; क्योंकि वो दुनिया के किनारे से सुलेमान की हिकमत सुनने को आई; और देखो यहाँ वो है जो सुलेमान से भी बड़ा है। ४३ जब बदरूह आदमी में से निकलती है तो सूखे मक़ामों में आराम ढूँडती फिरती है, और नहीं पाती। ४४ तब कहती है, 'मैं अपने उस घर में फिर जाऊँगी जिससे निकली थी।' और आकर उसे ख़ाली और झड़ा हुआ और आरास्ता पाती है। ४५ फिर जा कर और सात रूहें अपने से बुरी अपने साथ ले आती है और वो दाख़िल होकर वहाँ बसती हैं; और उस आदमी का पिछला हाल पहले से बदतर हो जाता है, इस ज़माने के बुरे लोगों का हाल भी ऐसा ही होगा।" ४६ जब वो भीड़ से ये कह रहा था, उसकी माँ और भाई बाहर खड़े थे, और उससे बात करना चाहते थे। ४७ किसी ने उससे कहा, "देख तेरी माँ और भाई बाहर खड़े हैं और तुझ से बात करना चाहते हैं।" ४८ उसने ख़बर देने वाले को जवाब में कहा "कौन है मेरी माँ और कौन हैं मेरे भाई?" ४९ फिर अपने शागिर्दों की तरफ़ हाथ बढ़ा कर कहा, "देखो, मेरी माँ और मेरे भाई ये हैं।" ५० क्योंकि जो कोई मेरे आस्मानी बाप की मर्ज़ी पर चले वही मेरा भाई, मेरी बहन और माँ है।"

१३

१ उसी रोज़ ईसा' घर से निकलकर झील के किनारे जा बैठा। २ उस के पास एसी बड़ी भीड़ जमा हो गई, कि वो नाव पर चढ़ बैठा, और सारी भीड़ किनारे पर खड़ी रही। ३ और उसने उनसे बहुत सी बातें मिसालों में कहीं "देखो एक बोने वाला बीज बोने निकला।

४ और बोते वक्रत कुछ दाने राह के किनारे गिरे और परिन्दों ने आकर उन्हें चुग लिया। ५ और कुछ पथरीली ज़मीन पर गिरे जहाँ उनको बहुत मिट्टी न मिली और गहरी मिट्टी न मिलने की वज़ह से जल्द उग आए। ६ और जब सूरज निकला तो जल गए और जड़ न होने की वजह से सूख गए। ७ और कुछ झाड़ियों में गिरे और झाड़ियों ने बढ़ कर उनको दबा लिया। ८ और कुछ अच्छी ज़मीन पर गिरे और फ़ल लाए; कुछ सौ गुना कुछ साठ गुना कुछ तीस गुना। ९ जिसके कान हों वो सुन ले!” १० शागिर्दों ने पास आ कर उससे पूछा “तू उनसे मिसालों में क्या बातें करता है?” ११ उस ने जवाब में उनसे कहा “इसलिए कि तुम को आस्मान की बादशाही के राज़ की समझ दी गई है, मगर उनको नहीं दी गई। १२ क्योंकि जिस के पास है उसे दिया जाएगा और उसके पास ज़्यादा हो जाएगा; और जिसके पास नहीं है उस से वो भी ले लिया जाएगा; जो उसके पास है। १३ मैं उनसे मिसालों में इसलिए बातें कहता हूँ; कि वो देखते हुए नहीं देखते और सुनते हुए नहीं सुनते और नहीं समझते। १४ उनके हक़ में यसायाह की ये नबूव्वत पूरी होती है कि ‘तुम कानों से सुनोगे पर हरगिज़ न समझोगे, और आँखों से देखोगे और हरगिज़ मा'लूम न करोगे। १५ क्योंकि इस उम्मत के दिल पर चर्बी छा गई है, और वो कानों से ऊँचा सुनते हैं; और उन्होंने अपनी आँखें बन्द कर ली हैं; ताकि ऐसा न हो कि आँखों से मा'लूम करें और कानों से सुनें और दिल से समझें और रुजू लाएँ और मैं उनको शिफ़ा बरूशूँ।’ १६ लेकिन मुबारक हैं तुम्हारी आँखें क्योंकि वो देखती हैं और तुम्हारे कान इसलिए कि वो सुनते हैं। १७ क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ कि बहुत से नबियों और रास्तबाज़ों की आरजू थी कि जो कुछ तुम देखते हो देखें मगर न देखा और जो बातें तुम सुनते हो सुनें मगर न सुनीं। १८ पस बोलनेवाले की मिसाल सुनो। १९ जब कोई बादशाही का कलाम सुनता है और समझता नहीं तो जो उसके दिल में बोया

गया था उसे वो शैतान छीन ले जाता है ये वो है जो राह के किनारे बोया गया था। २० और वो पथरीली ज़मीन में बोया गया; ये वो है जो कलाम को सुनता है, और उसे फ़ौरन खुशी से कुबूल कर लेता है। २१ लेकिन अपने अन्दर जड़ नहीं रखता बल्कि चंद रोज़ा है, और जब कलाम के वजह से मुसीबत या जुल्म बर्पा होता है तो फ़ौरन ठोकर खाता है। २२ और जो झाड़ियों में बोया गया, ये वो है जो कलाम को सुनता है और दुनिया की फ़िक्र और दौलत का फ़रेब उस कलाम को दबा देता है; और वो बे फल रह जाता है। २३ और जो अच्छी ज़मीन में बोया गया, ये वो है जो कलाम को सुनता और समझता है और फल भी लाता है; कोई सौ गुना फलता है, कोई साठ गुना, और कोई तीस गुना।” २४ उसने एक और मिसाल उनके सामने पेश करके कहा, “आसमान की बादशाही उस आदमी की तरह है; जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बोया। २५ मगर लोगों के सोते में उसका दुश्मन आया और गेहूँ में कड़वे दाने भी बो गया। २६ पस जब पत्तियाँ निकलीं और बालें आईं तो वो कड़वे दाने भी दिखाई दिए। २७ नौकरों ने आकर घर के मालिक से कहा ‘ऐ खुदावन्द क्या तू ने अपने खेत में अच्छा बीज न बोया था? उस में कड़वे दाने कहाँ से आ गए?’ २८ उस ने उनसे कहा ‘ये किसी दुश्मन का काम है, नौकरों ने उससे कहा, तो क्या तू चाहता है कि हम जाकर उनको जमा करें।’ २९ उस ने कहा ‘नहीं, ‘ऐसा न हो कि कड़वे दाने जमा करने में तुम उनके साथ गेहूँ भी उखाड़ लो। ३० कटाई तक दोनों को इकट्ठा बढ़ने दो, और कटाई के वक़्त में काटने वालों से कह दूँगा कि पहले कड़वे दाने जमा कर लो और जलाने के लिए उनके गठे बाँध लो और गेहूँ मेरे खेत में जमा कर दो।’ ३१ उसने एक और मिसाल उनके सामने पेश करके कहा, आसमान की बादशाही उस राई के दाने की तरह है जिसे किसी आदमी ने लेकर अपने खेत में बो दिया। ३२ वो सब बीजों से छोटा तो है मगर जब बढ़ता है तो सब तरकारियों से बड़ा और ऐसा दरख्त हो जाता है; कि हवा के

परिन्दे आकर उसकी डालियों पर बसेरा करते हैं।” ३३ उस ने एक और मिसाल उनको सुनाई। “आस्मान की बादशाही उस खमीर की तरह है जिसे किसी औरत ने ले कर तीन पैमाने आटे में मिला दिया और वो होते होते सब खमीर हो गया।” ३४ ये सब बातें ईसा ने भीड़ से मिसालों में कहीं और बगैर मिसालों के वो उनसे कुछ न कहता था। ३५ ताकि जो नबी के जरिये कहा गया थ वो पूरा हो “मैं मिसालों में अपना मुँह खोलूँगा; में उन बातों को ज़ाहिर करूँगा जो बिना -ए- आलम से छिपी रही हैं।” ३६ उस वक़्त वो भीड़ को छोड़ कर घर में गया और उस के शागिर्दों ने उस के पास आकर कहा “खेत के कड़वे दाने की मिसाल हमें समझा दे। ” ३७ उस ने जवाब में उन से कहा अच्छे बीज का बोने वाला इबने आदम है। ३८ और खेत दुनिया है और अच्छा बीज बादशाही के फ़र्ज़न्द और कड़वे दाने उस शैतान के फ़र्ज़न्द हैं। ३९ जिस दुश्मन ने उन को बोया वो इब्लीस है। और कटाई दुनिया का आख़िर है और काटने वाले फ़िरिश्ते हैं। ४० पस जैसे कड़वे दाने जमा किए जाते और आग में जलाए जाते हैं। ४१ इब्न-ए- आदम अपने फ़िरिश्तों को भेजेगा; और वो सब ठोकर खिलाने वाली चीज़ें और बदकारों को उस की बादशाही में से जमा करेंगे। ४२ और उनको आग की भट्टी में डाल देंगे वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा। ४३ उस वक़्त रास्तबाज़ अपने बाप की बादशाही में सूरज की तरह चमकेंगे; जिसके कान हों वो सुन ले! ४४ आसमान की बादशाही खेत में छिपे ख़जाने की तरह है जिसे किसी आदमी ने पाकर छिपा दिया और ख़ुशी के मारे जाकर जो कुछ उसका था; बेच डाला और उस खेत को ख़रीद लिया। ४५ फिर आसमान की बादशाही उस सौदागर की तरह है, जो उम्दा मोतियों की तलाश में था। ४६ जब उसे एक बेशक़ीमती मोती मिला तो उस ने जाकर जो कुछ उस का था बेच डाला और उसे ख़रीद लिया। ४७ फिर आसमान की बादशाही उस बड़े जाल की तरह है; जो दरिया में डाला गया और उस ने हर क़िस्म की मछलियाँ समेट लीं। ४८ और जब भर गया तो उसे किनारे पर खींच लाए; और बैठ

कर अच्छी अच्छी तो बर्तनों में जमा कर लीं और जो खराब थी फेंक दीं।^{४९} दुनिया के आखिर में ऐसा ही होगा; फ़रिश्ते निकलेंगे और शरीरों को रास्तबाज़ों से जुदा करेंगे; और उनको आग की भट्टी में डाल देंगे।^{५०} वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।”^{५१} “क्या तुम ये सब बातें समझ गए“ उन्होंने उससे कहा”हाँ।^{५२} उसने उससे कहा“इसलिए हर आलिम जो आसमान की बादशाही का शागिर्द बना है उस घर के मालिक की तरह है जो अपने खज़ाने में से नई और पुरानी चीज़ें निकालता है।”^{५३} जब ईसा' ये मिसाल ख़त्म कर चुका तो ऐसा हुआ कि वहाँ से रवाना हो गया।^{५४} और अपने वतन में आकर उनके इबादतख़ाने में उनको ऐसी ता'लीम देने लगा; कि वो हैरान होकर कहने लगे; इस में ये हिकमत और मो'जिज़े कहाँ से आए? ^{५५} क्या ये बड़ई का बेटा नहीं? और इस की माँ का नाम मरियम और इस के भाई या'कूब और यूसुफ़ और शमा'ऊन और यहूदा नहीं? ^{५६} और क्या इस की सब बहनें हमारे यहाँ नहीं? फिर ये सब कुछ इस में कहाँ से आया?” ^{५७} और उन्होंने उसकी वजह से ठोकर खाई मगर ईसा' ने उन से कहा “नबी अपने वतन और अपने घर के सिवा कहीं बेइज़्ज़त नहीं होता।”^{५८} और उसने उनकी बेऐ'तिकादी की वजह से वहाँ बहुत से मो'जिज़े न दिखाए।

१४

१ उस वक़्त चौथाई मुल्क के हाकिम हेरोदेस ने ईसा' की शोहरत सुनी।^२ और अपने ख़ादिमों से कहा “ये यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला है वो मुर्दों में से जी उठा है; इसलिए उससे ये मो'जिज़े ज़ाहिर होते हैं।”^३ क्यूँकि हेरोदेस ने अपने भाई फ़िलिप्पुस की बीवी हेरोदियास की वजह से यूहन्ना को पकड़ कर बाँधा और कैद ख़ाने में डाल दिया था।^४ क्यूँकि यूहन्ना ने उससे कहा था “कि इसका रखना तुझे जायज नहीं।”^५ और वो हर चंद उसे क़त्ल करना चाहता था, मगर आम लोगों से डरता था क्यूँकि वो उसे नबी मानते थे।^६ लेकिन जब हेरोदेस की साल गिरह हुई तो हेरोदियास की बेटी ने महफ़िल

में नाच कर हेरोदेस को ख़ुश किया। ७ इस पर उसने क्रसम खाकर उससे वा'दा किया “जो कुछ तू माँगगी तुझे दूँगा।” ८ उसने अपनी माँ के सिखाने से कहा, “मुझे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर थाल में यहीं मँगवा दे।” ९ “ बादशाह गमगीन हुआ; मगर अपनी क्रसमों और मेहमानों की वजह से उसने हुक्म दिया कि “” दे दिया जाए।” १० और आदमी भेज कर कैद ख़ाने में यूहन्ना का सिर कटवा दिया। ११ और उस का सिर थाल में लाया गया और लड़की को दिया गया; और वो उसे अपनी माँ के पास ले गई। १२ और उसके शागिर्दों ने आकर लाश उठाई और उसे दफ़न कर दिया, और जा कर ईसा' को ख़बर दी। १३ जब ईसा' ने ये सुना तो वहाँ से नाव पर अलग किसी वीरान जगह को रवाना हुआ और लोग ये सुनकर शहर शहर से पैदल उसके पीछे गए। १४ उसने उतर कर बड़ी भीड़ देखी और उसे उन पर तरस आया; और उसने उनके बीमारों को अच्छा कर दिया। १५ जब शाम हुई तो शागिर्द उसके पास आकर कहने लगे “जगह वीरान है और वक़्त गुज़र गया है लोगों को रुख़सत कर दे ताकि गाँव में जाकर अपने लिए खाना खरीद लें।” १६ ईसा' ने उनसे कहा , “इन्हें जाने की ज़रूरत नहीं, तुम ही इनको खाने को दो।” १७ उन्होंने उससे कहा “यहाँ हमारे पास पाँच रोटियाँ और दो मछलियों के सिवा और कुछ नहीं।” १८ उसने कहा “वो यहाँ मेरे पास ले आओ,” १९ और उसने लोगों को घास पर बैठने का हुक्म दिया। फिर उस ने वो पाँच रोटियों और दो मछलियाँ लीं और आसमान की तरफ़ देख कर बर्कत दी और रोटियाँ तोड़ कर शागिर्दों को दीं और शागिर्दों ने लोगो को। २० और सब खाकर सेर हो गए; और उन्होंने बचे हुए टुकड़ों से भरी हुई बारह टोक़रियाँ उठाईं। २१ और खानेवाले औरतों और बच्चों के सिवा पाँच हज़ार मर्द के करीब थे। २२ और उसने फ़ौरन शागिर्दों को मजबूर किया कि नाव में सवार होकर उससे पहले पार चले जाएँ जब तक वो लोगों को रुख़सत करे। २३ और लोगों को रुख़सत करके तन्हा दुआ करने के

लिए पहाड़ पर चढ़ गया; और जब शाम हुई तो वहाँ अकेला था। २४ मगर नाव उस वक़्त झील के बीच में थी और लहरों से डगमगा रही थी; क्योंकि हवा मुखालिफ़ थी। २५ और वो रात के चौथे पहर झील पर चलता हुआ उनके पास आया। २६ शागिर्द उसे झील पर चलते हुए देखकर घबरा गए और कहने लगे “भूत है,” और डर कर चिल्ला उठे। २७ ईसा' ने फ़ौरन उन से कहा “इत्मिनान रख्खो! मैं हूँ। डरो मत।” २८ पतरस ने उससे जवाब में कहा “ऐ ख़ुदावन्द, अगर तू है तो मुझे हुक्म दे कि पानी पर चलकर तेरे पास आऊँ।” २९ उस ने कहा, “आ।” पतरस नाव से उतर कर ईसा' के पास जाने के लिए पानी पर चलने लगा। ३० मगर जब हवा देखी तो डर गया और जब डूबने लगा तो चिल्ला कर कहा “ऐ ख़ुदावन्द, मुझे बचा!” ३१ ईसा' ने फ़ौरन हाथ बढ़ा कर उसे पकड़ लिया। और उससे कहा, “ऐ कम ईमान तूने क्यूँ शक किया ?” ३२ जब वो नाव पर चढ़ आए तो हवा थम गई; ३३ “ जो नाव पर थे, उन्होंने सज़्दा करके कहा “यक्रीनन तू “ख़ुदा” का बेटा है!”” ३४ वो पार जाकर गनेसरत के इलाके में पहुँचे। ३५ और वहाँ के लोगों ने उसे पहचान कर उस सारे इलाके में ख़बर भेजी; और सब बीमारों को उस के पास लाए। ३६ और वो उसकी मिन्नत करने लगे कि उसकी पोशाक का किनारा ही छू लें और जितनों ने उसे छुआ वो अच्छे हो गए।

१५

१ उस वक़्त फ़रीसियों और आलिमों ने यरूशलीम से ईसा' के पास आकर कहा। २ “तेरे शागिर्द बुजुर्गों की रिवायत को क्यूँ टाल देते हैं; कि खाना खाते वक़्त हाथ नहीं धोते? ” ३ “ उस ने जवाब में उनसे कहा “ तुम अपनी रिवायात से “ख़ुदा” का हुक्म क्यूँ टाल देते हो?” ४ “ क्यूँकि “ख़ुदा” ने फ़रमाया है ‘अपने बाप की और अपनी माँ की इज़्ज़त करना’ और जो बाप या माँ को बुरा कहे वो ज़रूर जान से मारा जाए’ ” ५ “ मगर तुम कहते हो कि जो कोई

बाप या माँ से कहे जिस चीज़ का तुझे मुझ से फ़ायदा पहुँच सकता था; 'वो "ख़ुदा" की नज़्र हो चुकी ।" ६ " तो वो अपने बाप की इज़्ज़त न करे; पस तुम ने अपनी रिवायत से "ख़ुदा" का कलाम बातिल कर दिया।" ७ "ऐ रियाकारो! यसायाह ने तुम्हारे हक़ में क्या ख़ूब नबूवत की है, ८ "ये उम्मत ज़बान से तो मेरी इज़्ज़त करती है मगर इन का दिल मुझ से दूर है। ९ "और ये बेफ़ाइदा मेरी इबादत करते हैं क्योंकि इन्सानी अहक़ाम की ता'लीम देते हैं।" १० "फिर उस ने लोगों को पास बुला कर उनसे कहा, "सुनो और समझो। ११ "जो चीज़ मुँह में जाती है, वो आदमी को नापाक नहीं करती मगर जो मुँह से निकलती है वही आदमी को नापाक करती है।" १२ " इस पर शागिर्दों ने उसके पास आकर कहा; "क्या तू जानता है कि फ़रीसियों ने ये बात सुन कर ठोकर खाई?" १३ "उसने जवाब में कहा; "जो पौदा मेरे आसमानी बाप ने नहीं लगाया, जड़ से उखाड़ा जाएगा। १४ "उन्हें छोड़ दो, वो अन्धे राह बताने वाले हैं; और अगर अन्धे को अन्धा राह बताएगा तो दोनों गड़ढे में गिरेगे।" १५ "पतरस ने जवाब में उससे कहा "ये मिसाल हमें समझा दे।" १६ "उस ने कहा "क्या तुम भी अब तक नासमझ हो? १७ "क्या नहीं समझते कि जो कुछ मुँह में जाता है; वो पेट में पड़ता है और गंदगी में फेंका जाता है? १८ "मगर जो बातें मुँह से निकलती हैं वो दिल से निकलती हैं और वही आदमी को नापाक करती हैं। १९ "क्योंकि बुरे ख़याल, ख़ू रेज़ियाँ, ज़िनाकारियाँ, हरामकारियाँ, चोरियाँ, झूटी, गवाहियाँ, बदगोईयाँ, दिल ही से निकलती हैं।" २० "यही बातें हैं जो आदमी को नापाक करती हैं "मगर बग़ैर हाथ धोए खाना खाना आदमी को नापाक नहीं करता। २१ "फिर ईसा! वहाँ से निकल कर सूर और सैदा के इलाक़े को खाना हुआ। २२ " और देखो; एक कनानी औरत उन सरहदों से निकली और पुकार कर कहने लगी "“ऐ ख़ुदावन्द”" इबने दाऊद मुझ पर रहम कर। एक बदरूह मेरी बेटी को बहुत सताती है।" २३ "मगर उसने उसे कुछ जवाब न

दिया “उसके शागिर्दों ने पास आकर उससे ये अर्ज़ किया कि ; उसे रुख़सत कर दे, क्योंकि वो हमारे पीछे चिल्लाती है ।” २४ उसने जवाब में कहा , “में इस्राईल के घराने की खोई हुई भेड़ों के सिवा और किसी के पास नहीं भेजा गया।” २५ मगर उसने आकर उसे सज्दा किया और कहा “ऐ खुदावन्द, मेरी मदद कर!” २६ उस ने जवाब में कहा “लड़कों की रोटी लेकर कुत्तों को डाल देना अच्छा नहीं।” २७ उसने कहा “हाँ खुदावन्द,। क्योंकि कुत्ते भी उन टुकड़ों में से खाते हैं जो उनके मालिकों की मेज़ से गिरते हैं।” २८ इस पर ईसा' ने जवाब में कहा, “ऐ औरत, तेरा ईमान बहुत बड़ा है। जैसा तू चाहती है तेरे लिए वैसा ही हो; और उस की बेटी ने उसी वक़्त शिफ़ा पाई”। २९ फिर ईसा' वहाँ से चल कर गलील की झील के नज़दीक आया और पहाड़ पर चढ़ कर वहीं बैठ गया। ३० और एक बड़ी भीड़ लंगड़ों, अन्धों, गूँगों, टुन्डों और बहुत से और बीमारों को अपने साथ लेकर उसके पास आई और उनको उसके पाँवों में डाल दिया; उसने उन्हें अच्छा कर दिया। ३१ “ चुनाँचे जब लोगों ने देखा कि गूँगे बोलते, टुन्डे तन्दुरुस्त होते, लंगड़े चलते फिरते और अन्धे देखते हैं तो ता'ज्जुब किया; और इस्राईल के ““खुदा”” की बड़ाई की।” ३२ और ईसा' ने अपने शागिर्दों को पास बुला कर कहा, “मुझे इस भीड़ पर तरस आता है। क्योंकि ये लोग तीन दिन से बराबर मेरे साथ हैं और इनके पास खाने को कुछ नहीं और मैं इनको भूखा रुख़सत करना नहीं चाहता; कहीं ऐसा न हो कि रास्ते में थककर रह जाएँ।” ३३ शागिर्दों ने उससे कहा “वीरान में हम इतनी रोटियाँ कहाँ से लाएँ; कि ऐसी बड़ी भीड़ को सेर करें?” ३४ ईसा' ने उनसे कहा तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?” उन्होंने कहा सात और थोड़ी सी छोटी मछलियाँ हैं ।” ३५ उसने लोगों को हुक्म दिया कि ज़मीन पर बैठ जाएँ। ३६ और उन सात रोटियों और मछलियों को लेकर शुक्र किया और उन्हें तोड़ कर शागिर्दों को देता गया और शागिर्द लोगों को। ३७ और सब खाकर सेर हो गए; और बचे हुए टुकड़ों से भरे

हुए सात टोकरे उठाए। ^{३८} और खाने वाले सिवा औरतों और बच्चों के चार हज़ार मर्द थे। ^{३९} फिर वो भीड़ को रूखसत करके नाव पर सवार हुआ और मगदन की सरहदों में आ गया।

१६

^१ फिर फ़रीसियों और सद्क़ियों ने पास आकर आज़माने के लिए उससे दरख़्वास्त की; कि हमें कोई आसमानी निशान दिखा। ^२ उसने जवाब में उनसे कहा “शाम को तुम कहते हो, ‘खुला रहेगा’, क्योंकि आसमान लाल है” ^३ और सुबह को ये कि ‘आज आन्धी चलेगी’ क्योंकि आसमान लाल धुन्धला है ‘तुम आसमान की सूरत में तो पहचान करना जानते हो मगर ज़मानों की आलामतों में पहचान नहीं कर सकते। ^४ इस ज़माने के बुरे और ज़िनाकार लोग निशान तलब करते हैं; मगर यूनाह के निशान के सिवा कोई और निशान उनको न दिया जाएगा। और वो उनको छोड़ कर चला गया”। ^५ शागिर्द पार जाते वक़्त रोटी साथ लेना भूल गए थे। ^६ ईसा' ने उन से कहा, “ख़बरदार, फ़रीसियों और सद्क़ियों के ख़मीर से होशियार रहना।” ^७ वो आपस में चर्चा करने लगे, “हम रोटी नहीं लाए।” ^८ ईसा' ने ये मालूम करके कहा ऐ कम ऐतिकादों तुम आपस मे क्यौँ चर्चा करते हो कि हमारे पास रोटी नहीं? ^९ क्या अब तक नहीं समझते और उन पाँच हज़ार आदमियों की पाँच रोटियाँ तुम को याद नहीं? और न ये कि कितनी टोकरियाँ उठाई? ^{१०} और न उन चार हज़ार आदमियों की सात रोटियाँ? और न ये कि कितने टोकरे उठाए। ^{११} “क्या वजह है कि तुम ये नहीं समझते कि मैंने तुम से रोटी के बारे मे नहीं कहा ““फ़रीसियों और सद्क़ियों के ख़मीर से होशियार रहो।”” ^{१२} जब उनकी समझ में न आया कि उसने रोटी के ख़मीर से नहीं; बल्कि फ़रीसियों और सद्क़ियों की ता'लीम से ख़बरदार रहने को कहा था। ^{१३} जब ईसा' कैसरिया फ़िलप्पी के इलाक़े में आया तो उसने अपने शागिर्दों से ये पूछा “लोग इब्न-ए-आदम को क्या कहते हैं?” ^{१४} उन्होने कहा “कुछ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहते हैं।”

कुछ एलिया और कुछ यरमियाह या नबियों में से कोई।” १५ “उसने उनसे कहा; “मगर तुम मुझे क्या कहते हो?”” १६ “शमा'ऊन पतरस ने जवाब में कहा “तू ज़िन्दा “खुदा” का बेटा मसीह है।” १७ ईसा' ने जवाब में उससे कहा;” मुबारक है तू शमऊन बर-यूनाह, क्योंकि ये बात गोश्त और खून ने नहीं बल्कि मेरे बाप ने जो आसमान पर है; तुझ पर ज़ाहिर की है। १८ और मैं भी तुम से कहता हूँ; कि तू पतरस है; और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा। और आलम-ए-अरवाह के दरवाज़े उस पर गालिब न आएँगे। १९ मैं आसमान की बादशाही की कुन्जियाँ तुझे दूँगा; और जो कुछ तू ज़मीन पर बाँधे गा वो आसमान पर बाँधेगा और जो कुछ तू ज़मीन पर खोले गा वो आसमान पर खुलेगा ” २० उस वक़्त उसने शागिर्दों को हुक्म दिया कि किसी को न बताना कि मैं मसीह हूँ।” २१ उस वक़्त से ईसा' अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर करने लगा “कि उसे ज़रूर है कि यरूशलीम को जाए और बुजुर्गों और सरदार काहिनों और आलिमों की तरफ़ से बहुत दुःख उठाए; और क़त्ल किया जाए और तीसरे दिन जी उठे।” २२ “ इस पर पतरस उसको अलग ले जाकर मलामत करने लगा “ए खुदावन्द, “खुदा” न करे ये तुझ पर हरगिज़ नहीं आने का।” २३ “ उसने फिर कर पतरस से कहा, “ए शैतान, मेरे सामने से दूर हो ! तू मेरे लिए ठोकर का बा'इस है; क्योंकि तू “खुदा” की बातों का नहीं बल्कि आदमियों की बातों का खयाल रखता है।” २४ उस वक़्त ईसा' ने अपने शागिर्दों से कहा; अगर कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपने आपका इन्कार करे; अपनी सलीब उठाए और मेरे पीछे हो ले। २५ क्योंकि जो कोई अपनी जान बचाना चाहे उसे खोएगा; और जो कोई मेरी खातिर अपनी जान खोएगा उसे पाएगा। २६ अगर आदमी सारी दुनिया हासिल करे और अपनी जान का नुक़सान उठाए तो उसे क्या फ़ाइदा होगा? २७ क्योंकि इब्न-ए-आदम अपने बाप के जलाल में अपने फ़रिश्तों के साथ आएगा; उस वक़्त हर एक को उसके कामों के मुताबिक़

बदला देगा। २८ “ “मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो यहाँ खड़े हैं उन में से कुछ ऐसे हैं कि जब तक इब्न-ए-आदम को उसकी बादशाही में आते हुए न देख लेंगे; मौत का मज़ा हरगिज़ न चखेंगे।”

१७

१ छः दिन के बाद ईसा' ने पतरस, को और याकूब और उसके भाई यूहन्ना को साथ लिया और उन्हें एक ऊँचे पहाड़ पर ले गया। २ और उसके सामने उसकी सूरत बदल गई; और उसका चेहरा सूरज की तरह चमका और उसकी पोशाक नूर की तरह सफ़ेद हो गई। ३ और देखो; मूसा और एलियाह उसके साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए। ४ पतरस ने ईसा' से कहा “ ऐ ख़ुदावन्द, हमारा यहाँ रहना अच्छा है; मर्ज़ी हो तो मैं यहाँ तीन डेरे बनाऊँ। एक तेरे लिए; एक मूसा के लिए; और एक एलियाह के लिए।” ५ वो ये कह ही रहा था कि देखो; “एक नूरानी बादल ने उन पर साया कर लिया और उस बादल में से आवाज़ आई; ये मेरा प्यारा बेटा है जिससे मैं ख़ुश हूँ; उसकी सुनो।” ६ शागिर्द ये सुनकर मुँह के बल गिरे और बहुत डर गए। ७ ईसा' ने पास आ कर उन्हें छुआ और कहा, “उठो डरो मत।” ८ जब उन्होंने अपनी आँखें उठाईं तो ईसा' के सिवा और किसी को न देखा। ९ जब वो पहाड़ से उतर रहे थे तो ईसा' ने उन्हें ये हुक्म दिया “जब तक इब्न-ए-आदम मुर्दों में से जी न उठे; जो कुछ तुम ने देखा है किसी से इसका ज़िक्र न करना।” १० शागिर्दों ने उस से पूछा, “फिर आलिम क्यूँ कहते हैं कि एलियाह का पहला आना ज़रूर है? ११ उस ने जवाब में कहा, “एलियाह अलबत्ता आएगा और सब कुछ बहाल करेगा। १२ लेकिन मैं तुम से कहता हूँ; कि एलियाह तो आ चुका और उन्होंने ने उसे नहीं पहचाना बल्कि जो चाहा उसके साथ किया; इसी तरह इबने आदम भी उनके हाथ से दुःख उठाएगा।” १३ और शागिर्दों समझ गए; कि उसने उनसे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बारे में कहा है। १४ और जब वो भीड़ के

पास पहुँचे तो एक आदमी उसके पास आया; और उसके आगे घुटने टेक कर कहने लगा। १५ “ऐ खुदावन्द, मेरे बेटे पर रहम कर, क्योंकि उसको मिर्गी आती है और वो बहुत दुःख उठाता है; इसलिए कि अक्सर आग और पानी में गिर पड़ता है। १६ और मैं उसको तेरे शागिर्दों के पास लाया था; मगर वो उसे अच्छा न कर सके।” १७ ईसा' ने जवाब में कहा ऐ बे ऐ'तिक्राद और टेढ़ी नस्ल मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा? कब तक तुम्हारी बर्दाशत करूँगा? उसे यहाँ मेरे पास लाओ।” १८ ईसा' ने उसे झिड़का और बदरूह उससे निकल गई; वो लड़का उसी वक़्त अच्छा हो गया। १९ तब शागिर्दों ने ईसा' के पास आकर तन्हाई में कहा “हम इस को क्यों न निकाल सके?” २० उस ने उनसे कहा, “अपने ईमान की कमी की वजह से ‘क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, कि अगर तुम में राई के दाने के बराबर भी ईमान होगा’ तो इस पहाड़ से कह सकोगे; यहाँ से सरक कर वहाँ चला जा, और वो चला जाएगा; और कोई बात तुम्हारे लिए नामुमकिन न होगी।” २१ (लेकिन ये क्रिस्म दुआ और रोज़े के सिवा और किसी तरह नहीं निकल सकती)। २२ जब वो गलील में ठहरे हुए थे, ईसा' ने उनसे कहा, “इब्न-ए-आदम आदमियों के हवाले किया जाएगा।” २३ और वो उसे क़त्ल करेंगे और तीसरे दिन ज़िन्दा किया जाएगा ”इस पर वो बहुत ही ग़मगीन हुए।” २४ और जब कफ़रनहूम में आए तो नीम मिस्काल लेनेवालों ने पतरस के पास आकर कहा “क्या तुम्हारा उस्ताद नीम मिस्काल नहीं देता?” २५ “उसने कहा ”हाँ देता है“ और जब वो घर में आया तो ईसा' ने उसके बोलने से पहले ही कहा “ऐ शमा'ऊन तू क्या समझता है? दुनिया के बादशाह किनसे महसूल या जिज़िया लेते हैं; अपने बेटों से या ग़ैरों से?” २६ जब उसने कहा “ग़ैरों से ”तो ईसा' ने उनसे कहा “ पस बेटे बरी हुए। २७ लेकिन मुबादा हम इनके लिए ठोकर का बा'इस हों तू झील पर जाकर बन्सी डाल और जो मछली पहले निकले उसे ले और जब तू उसका मुँह खोलेगा; तो एक मिस्काल

पाएगा; वो लेकर मेरे और अपने लिए उन्हें दे।”

१८

१ उस वक़्त शागिर्द ईसा' के पास आ कर कहने लगे, “पस आस्मान की बादशाही में बड़ा कौन है?” २ उसने एक बच्चे को पास बुलाकर उसे उनके बीच में खड़ा किया। ३ और कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि अगर तुम तौबा न करो और बच्चों की तरह न बनो तो आस्मान की बादशाही में हरगिज़ दाखिल न होगे। ४ पस जो कोई अपने आपको इस बच्चे की तरह छोटा बनाएगा; वही आसमान की बादशाही में बड़ा होगा। ५ और जो कोई ऐसे बच्चे को मेरे नाम पर कुबूल करता है; वो मुझे कुबूल करता है। ६ लेकिन जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर ईमान लाए हैं; किसी को ठोकर खिलाता है उसके लिए ये बेहतर है कि बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाए और वो गहरे समुन्दर में डुबो दिया जाए। ७ ठोकरों की वज़ह से दुनिया पर अफ़सोस है; क्योंकि ठोकरों का होना ज़रूर है; लेकिन उस आदमी पर अफ़सोस है; जिसकी वज़ह से ठोकर लगे। ८ पस अगर तेरा हाथ या तेरा पाँव तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट कर अपने पास से फेंक दे; टुन्डा या लंगड़ा होकर ज़िन्दगी में दाखिल होना तेरे लिए इससे बेहतर है; कि दो हाथ या दो पाँव रखता हुआ तू हमेशा की आग में डाला जाए। ९ और अगर तेरी आँख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल कर अपने से फेंक दे ; काना हो कर ज़िन्दगी में दाखिल होना तेरे लिए इससे बेहतर है कि दो आँखें रखता हुआ तू जहन्नम कि आग में डाला जाए। १० खबरदार! इन छोटों में से किसी को नाचीज़ न जानना। क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ; कि आसमान पर उनके फ़रिश्ते मेरे आसमानी बाप का मुँह हर वक़्त देखते हैं। ११ [क्योंकि इब्न-ए-आदम खोए हुआओं को ढूँडने और नजात देने आया है।] १२ तुम क्या समझते हो? अगर किसी आदमी की सौ भेड़ें हों और उन में से एक भटक जाए; तो क्या वो निनानवें

को छोड़कर और पहाड़ों पर जाकर उस भटकी हुई को न ढूँडेंगा?। १३ और अगर ऐसा हो कि उसे पाए; तो मैं तुम से सच कहता हूँ; कि वो उन निनानवें जो भटकी हुई नहीं इस भेड़ की ज्यादा खुशी करेगा। १४ इस तरह तुम्हारा आसमानी बाप ये नहीं चाहता कि इन छोटों में से एक भी हलाक हो। १५ अगर तेरा भाई तेरा गुनाह करे तो जा और अकेले में बात चीत करके उसे समझा; और अगर वो तेरी सुने तो तूने अपने भाई को पा लिया। १६ और अगर न सुने, तो एक दो आदमियों को अपने साथ ले जा, ताकि हर एक बात दो तीन गवाहों की ज़बान से साबित हो जाए। १७ और अगर वो उनकी भी सुनने से इन्कार करे, तो कलीसिया से कह, और अगर कलीसिया की भी सुनने से इन्कार करे तो तू उसे गैर क्रौम वाले और महसूल लेने वाले के बराबर जान। १८ मैं तुम से सच कहता हूँ; कि जो कुछ तुम ज़मीन पर बाँधोगे वो आसमान पर बँधेगा; और जो कुछ तुम ज़मीन पर खोलोगे; वो आसमान पर खुलेगा। १९ फिर मैं तुम से कहता हूँ; कि अगर तुम में से दो शरूस ज़मीन पर किसी बात के लिए जिसे वो चाहते हों इत्तफ़ाक़ करें तो वो मेरे बाप की तरफ़ से जो आसमान पर है, उनके लिए हो जाएगी। २० क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम से इकट्ठे हैं, वहाँ मैं उनके बीच में हूँ।” २१ उस वक़्त पतरस ने पास आकर उससे कहा“ऐ खुदावन्द, अगर मेरा भाई मेरा गुनाह करता रहे, तो मैं कितनी मर्तबा उसे मु'आफ़ करूँ? क्या सात बार तक?” २२ ईसा' ने उससे कहा, मैं तुझ से ये नहीं कहता कि सात बार, बल्कि सात दफा के सत्तर बार तक। २३ पस आसमान की बादशाही उस बादशाह की तरह है जिसने अपने नौकरों से हिसाब लेना चाहा। २४ और जब हिसाब लेने लगा तो उसके सामने एक कर्ज़दार हाज़िर किया गया; जिस पर उसके दस हज़ार तोड़े आते थे। २५ मगर चूँकि उसके पास अदा करने को कुछ न था; इसलिए उसके मालिक ने हुक़म दिया कि, ये और इसकी बीवी और बच्चे और जो कुछ इसका है सब बेचा जाए और कर्ज़ वसूल कर लिया जाए। २६ पस नौकर

ने गिरकर उसे सज्दा किया और कहा; 'ऐ खुदावन्द मुझे मोहलत दे, मैं तेरा सारा कर्ज़ा अदा करूँगा।' २७ उस नौकर के मालिक ने तरस खाकर उसे छोड़ दिया, और उसका कर्ज़ बर्ख़्श दिया। २८ जब वो नौकर बाहर निकला तो उसके हम ख़िदमतों में से एक उसको मिला; जिस पर उसके सौ दीनार आते थे, उसने उसको पकड़ कर उसका गला घोंटा और कहा, 'जो मेरा आता है अदा कर दे!' २९ पस उसके हमख़िदमत ने उसके सामने गिरकर मिन्नत की और कहा, 'मुझे मोहलत दे; मैं तुझे अदा कर दूँगा', ३० उसने न माना; बल्कि जाकर उसे कैदखाने में डाल दिया; कि जब तक कर्ज़ अदा न कर दे कैद रहे। ३१ पस उसके हमख़िदमत ये हाल देखकर बहुत ग़मगीन हुए; और आकर अपने मालिक को सब कुछ जो हुआ था; सुना दिया। ३२ इस पर उसके मालिक ने उसको पास बुला कर उससे कहा, 'ऐ शरीर नौकर; मैं ने वो सारा कर्ज़ तुझे इसलिए मु'आफ़ कर दिया; कि तूने मेरी मिन्नत की थी। ३३ क्या तुझे ज़रूरी न था, कि जैसे मैं ने तुझ पर रहम किया; तू भी अपने हमख़िदमत पर रहम करता?' ३४ उसके मालिक ने ख़फा होकर उसको ज़ल्लादों के हवाले किया; कि जब तक तमाम कर्ज़ अदा न कर दे कैद रहे। ३५ मेरा आसमानी बाप भी तुम्हारे साथ इसी तरह करेगा; अगर तुम में से हर एक अपने भाई को दिल से मु'आफ़ न करे।"

१९

१ जब ईसा' ये बातें ख़त्म कर चुका तो ऐसा हुआ कि गलील को रवाना होकर यरदन के पार यहूदिया की सरहदों में आया। २ और एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली; और उस ने उन्हें वहीं अच्छा किया। ३ और फ़रीसी उसे अज़माने को उसके पास आए और कहने लगे "क्या हर एक वज़ह से अपनी बीवी को छोड़ देना जायज़ है?" ४ उस ने जवाब में कहा , "क्या तुम ने नहीं पढ़ा कि जिसने उन्हें बनाया उसने शुरू ही से उन्हें मर्द और औरत बना कर कहा? ५ कि इस वज़ह से मर्द बाप से और माँ से जुदा होकर अपनी बीवी के साथ

रहेगा; 'और वो दोनों एक जिस्म होंगे।' ६ " पस वो दो नहीं, बल्कि एक जिस्म हैं; इसलिए जिसे "“खुदा”" ने जोड़ा है उसे आदमी जुदा न करे।" ७ उन्होंने उससे कहा "फिर मूसा ने क्यूँ हुक्म दिया है; कि तलाकनामा देकर छोड़ दी जाए?" ८ " "उस ने उनसे कहा , "मूसा ने तुम्हारी सख्त दिली की वज़ह से तुम को अपनी बीवियों को छोड़ देने की इजाज़त दी; मगर शुरू से ऐसा न था। " ९ और मैं तुम से कहता हूँ; कि जो कोई अपनी बीवी को हरामकारी के सिवा किसी और वज़ह से छोड़ दे; और दूसरी शादी करे, वो ज़िना करता है; और जो कोई छोड़ी हुई से शादी कर ले, वो भी ज़िना करता है" १० शागिर्दों ने उससे कहा "अगर मर्द का बीवी के साथ ऐसा ही हाल है; तो शादी करना ही अच्छा नहीं।" ११ उसने उनसे कहा, "सब इस बात को कुबूल नहीं कर सकते मगर वही जिनको ये कुदरत दी गई है। १२ क्यूँकि कुछ खोजे ऐसे हैं 'जो माँ के पेट ही से ऐसे पैदा हुए, और कुछ खोजे ऐसे हैं जिनको आदमियों ने खोजा बनाया; और कुछ खोजे ऐसे हैं, जिन्होंने आसमान की बादशाही के लिए अपने आप को खोजा बनाया, जो कुबूल कर सकता है करे। १३ उस वक़्त लोग बच्चों को उसके पास लाए, ताकि वो उन पर हाथ रखे और दुआ दे मगर शागिर्दों ने उन्हें झिड़का। १४ लेकिन ईसा' ने उनसे कहा, "बच्चों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो, क्यूँकि आसमान की बादशाही ऐसों ही की है। १५ और वो उन पर हाथ रखकर वहीं से चला गया। १६ और देखो; एक शरूस् ने पास आकर उससे कहा "मैं कौन सी नेकी करूँ, ताकि हमेशा की ज़िन्दगी पाऊँ?" १७ उसने उससे कहा, "तू मुझ से नेकी की वज़ह क्यूँ पूछता है? नेक तो एक ही है लेकिन अगर तू ज़िन्दगी में दाखिल होना चाहता है तो हुक्मों पर अमल कर।" १८ उसने उससे कहा "कौन से हुक्म पर? " ईसा' ने कहा , "ये कि खून न कर ज़िना न कर चोरी न कर, झूटी गवाही न दे। १९ अपने बाप की और माँ की इज़त कर

और अपने पड़ौसी से अपनी तरह मुहब्बत रख।” २० उस जवान ने उससे कहा कि “मैंने उन सब पर अमल किया है अब मुझ में किस बात की कमी है?” २१ ईसा ने उससे कहा अगर तू कामिल होना चाहे तो जा अपना माल-वा अस्बाब बेच कर गरीबों को दे, तुझे आसमान पर खज़ाना मिलेगा; और आकर मेरे पीछे होले।” २२ मगर वो जवान ये बात सुनकर उदास होकर चला गया, क्योंकि बड़ा मालदार था। २३ “ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा “मैं तुम से सच कहता हूँ कि दौलतमन्द का आस्मान की बादशाही में दाखिल होना मुश्किल है।” २४ “और फिर तुम से कहता हूँ, कि ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना इससे आसान है कि दौलतमन्द “खुदा” की बादशाही में दाखिल हो। “ २५ शागिर्द ये सुनकर बहुत ही हैरान हुए और कहने लगे “फिर कौन नजात पा सकता है?” २६ “ईसा ने उनकी तरफ देखकर कहा” ये आदमियों से तो नहीं हो सकता; लेकिन “खुदा” से सब कुछ हो सकता है।” २७ इस पर पतरस ने जवाब में उससे कहा “देख हम तो सब कुछ छोड़ कर तेरे पीछे हो लिए हैं ; पस हम को क्या मिलेगा?” २८ “ईसा ने उस से कहा “मैं तुम से सच कहता हूँ कि , जब इबने आदम नई पैदाइश में अपने जलाल के तख्त पर बैठेगा; तो तुम भी जो मेरे पीछे हो लिए हो बारह तख्तों पर बैठ कर इस्राईल के बारह क़बीलों का इन्साफ़ करोगे।” २९ और जिस किसी ने घरों, या भाइयों, या बहनों, या बाप, या माँ, या बच्चों, या खेतों को मेरे नाम की खातिर छोड़ दिया है; उसको सौ गुना मिलेगा; और हमेशा की ज़िन्दगी का वारिस होगा। ३० लेकिन बहुत से पहले आखिर हो जाएँगे; और आखिर पहले।

२०

१ क्योंकि आस्मान की बादशाही उस घर के मालिक की तरह है, जो सवेरे निकला ताकि अपने बाग़ में मज़दूर लगाए। २ उसने मज़दूरों से एक दीनार रोज़ तय करके उन्हें अपने बाग़ में भेज दिया।

३ फिर पहर दिन चढ़ने के करीब निकल कर उसने औरों को बाज़ार में बेकार खड़े देखा। ४ और उन से कहा, 'तुम भी बाग़ में चले जाओ; जो वाजिब है तुम को दूँगा; पस वो चले गए।' ५ फिर उसने दोपहर और तीसरे पहर के करीब निकल कर वैसा ही किया। ६ और कोई एक घंटा दिन रहे फिर निकल कर औरों को खड़े पाया, और उनसे कहा, 'तुम क्यों यहाँ तमाम दिन बेकार खड़े हो?' ७ उन्होंने उससे कहा 'इस लिए कि किसी ने हम को मज़दूरी पर नहीं लगाया।' उस ने उनसे कहा, 'तुम भी बाग़ में चले जाओ।' ८ जब शाम हुई तो बाग़ के मालिक ने अपने कारिन्दे से कहा 'मज़दूरों को बुलाओ और पिछलों से लेकर पहलों तक उनकी मज़दूरी दे दो,।' ९ जब वो आए जो घंटा भर दिन रहे लगाए गए थे, तो उनको एक एक दीनार मिला। १० जब पहले मज़दूर आए तो उन्होंने ये समझा कि हम को ज्यादा मिलेगा; और उनको भी एक ही दीनार मिला। ११ जब मिला तो घर के मालिक से ये कह कर शिकायत करने लगे। १२ " "इन् पिछलों ने एक ही घंटा काम किया है और तुने इनको हमारे बराबर कर दिया'जिन्होंने दिन भर बोझ उठाया; और सरलत धूप सही।" १३ उसने जवाब देकर उन में से एक से कहा, 'मियाँ मैं तेरे साथ बे इन्साफ़ी नहीं करता; क्या तेरा मुझ से एक दीनार नहीं ठहरा था।? १४ जो तेरा है उठा ले और चला जा मेरी मर्ज़ी ये है कि जितना तुझे देता हूँ इस पिछले को भी उतना ही दूँ। १५ क्या मुझे ठीक नहीं कि अपने माल से जो चाहूँ सो करूँ? तू इसलिए कि मैं नेक हूँ बुरी नज़र से देखता है।' १६ इसी तरह आखिर पहले हो जाएंगे; और पहले आखिर।" १७ और यरूशलीम जाते हुए ईसा' बारह शागिर्दों को अलग ले गया; और रास्ते में उनसे कहा। १८ "देखो; हम यरूशलीम को जाते हैं; और इबने आदम सरदार काहिनों और फ़कीहों के हवाले किया जाएगा; और वो उसके क़त्ल का हुक्म देंगे। १९ और उसे ग़ैर कौमों के हवाले करेंगे ताकि वो उसे ठट्टों में उड़ाएँ, और कोड़े मारें और मस्लूब करें और वो तीसरे दिन जिन्दा किया जाएगा।" २० उस वक़्त

जबदी के बेटों की माँ ने अपने बेटों के साथ उसके सामने आकर सिज्दा किया और उससे कुछ अर्ज करने लगी।^{२१} उसने उससे कहा “तू क्या चाहती है?” उस ने उससे कहा “फ़रमा कि ये मेरे दोनों बेटे तेरी बादशाही में तेरी दहनी और बाईं तरफ़ बैठें।”^{२२} ईसा' ने जवाब में कहा, “तुम नहीं जानते कि क्या माँगते हो? जो प्याला मैं पीने को हूँ क्या तुम पी सकते हो?” उन्होंने उससे कहा पी सकते हैं।^{२३} उसने उनसे कहा “मेरा प्याला तो पियोगे, लेकिन अपने दहने बाएँ किसी को बिठाना मेरा काम नहीं; मगर जिनके लिए मेरे बाप की तरफ़ से तैय्यार किया गया उन्ही के लिए है।”^{२४} जब शागिर्दों ने ये सुना तो उन दोनों भाइयों से खफ़ा हुए।^{२५} मगर ईसा' ने उन्हें पास बुलाकर कहा “तुम जानते हो कि ग़ैर कौमों के सरदार उन पर हुक़म चलाते और अमीर उन पर इख़्तियार जताते हैं।^{२६} तुम में ऐसा न होगा; बल्कि जो तुम में बड़ा होना चाहे वो तुम्हारा ख़ादिम बने।^{२७} और जो तुम में अक्वल होना चाहे वो तुम्हारा गुलांम बने।^{२८} चुनाँचे; इबने आदम इसलिए नहीं आया कि ख़िदमत ले; बल्कि इसलिए कि ख़िदमत करे और अपनी जान बहुतों के बदले फ़िदिये में दें।”^{२९} जब वो यरीहू से निकल रहे थे; एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली।^{३०} “और देखो; दो अँधों ने जो रास्ते के किनारे बैठे थे ये सुनकर कि ““ईसा”” जा रहा है चिल्ला कर कहा ““ए खुदावन्द”” इबने दाऊद हम पर रहम कर।””^{३१} “लोगों ने उन्हें डाँटा कि चुप रहें “लेकिन वो और भी चिल्ला कर कहने लगे!” “ए खुदावन्द”” इबने दाऊद हम पर रहम कर।””^{३२} ईसा' ने खड़े होकर उन्हें बुलाया और कहा “तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूँ?”^{३३} “उन्होंने उससे कहा “ए खुदावन्द”” हमारी आँखें खुल जाएँ।””^{३४} ईसा' को तरस आया। और उसने उन की आँखों को छुआ और वो फ़ौरन देखने लगे; और उसके पीछे हो लिए।

२१

१ जब वो यरूशलीम के नज़दीक पहुँचे और ज़ैतून के पहाड़ पर बैतफ़गे के पास आए; तो ईसा' ने दो शागिर्दों को ये कह कर भेजा। २ “अपने सामने के गाँव में जाओ। वहाँ पहुँचते ही एक गधी बंधी हुई और उसके साथ बच्चा पाओगे; उन्हें खोल कर मेरे पास ले आओ। ३ और अगर कोई तुम से कुछ कहे तो कहना कि ‘खुदावन्द को इन की ज़रूरत है।’ वो फ़ौरन इन्हें भेज देगा।” ४ ये इसलिए हुआ जो नबी की मा'रिफ़त कहा गया थ, वो पूरा हो। ५ ‘सिय्यून की बेटी से कहो, देख; , तेरा बादशाह तेरे पास आता है। वो हलीम है और गधे पर सवार है बल्कि लादू के बच्चे पर।’ ६ पस शागिर्दों ने जाकर जैसा ईसा' ने उनको हुकम दिया था; वैसा ही किया। ७ गधी और बच्चे को लाकर अपने कपड़े उन पर डाले और वो उस पर बैठ गया। ८ और भीड़ में से अक्सर लोगों ने अपने कपड़े रास्ते में बिछाए; औरों ने दरख्तों से डालियाँ काट कर राह में फैलाईं। ९ “ और भीड़ जो उसके आगे आगे जाती और पीछे पीछे चली आती थी “पुकार पुकार कर कहती थी “” इबने दाऊद को हो शा'ना ! मुबारक है वो जो खुदावन्द के नाम से आता है। आलम -ऐ बाला पर होशाना।”” १० और वो जब यरूशलम में दाखिल हुआ तो सारे शहर मे हलचल मच गई और लोग कहने लगे “ये कौन है?” ११ भीड़ के लोगों ने कहा “ये गलील के नासरत का नबी ईसा' है।” १२ “ और ईसा' ने “”खुदा”” की हैकल में दाखिल होकर उन सब को निकाल दिया; जो हैकल में ख़रीद- ओ फ़रोख्त कर रहे थे; और सराफ़ों के तख्त और कबूतर फ़रोशों की चौकियां उलट दीं। “ १३ और उन से कहा, “लिखा है ‘मेरा घर दुआ का घर कहलाएगा।’ मगर तुम उसे डाकुओं की खो बनाते हो।” १४ और अंधे और लंगड़े हैकल में उसके पास आए, और उसने उन्हें अच्छा किया। १५ लेकिन जब सरदार काहिनों और फ़कीहों ने उन अजीब कामों को जो उसने किए; और लड़कों को हैकल में इबने दाऊद को हो शा'ना पुकारते देखा तो ख़फ़ा होकर

उससे कहने लगे। १६ तू सुनता है कि ये क्या कहते हैं ईसा' ने उन से कहा ?"हाँ क्या तुम ने ये कभी नहीं पढ़ा 'बच्चों और शीरख्वारों के मुँह से तुम ने हम्द को कामिल कराया ?" १७ और वो उन्हें छोड़ कर शहर से बाहर बैत अन्नियाह में गया; और रात को वहीं रहा। १८ और जब सुबह को फिर शहर को जा रहा था; तो उसे भूक लगी। १९ और रास्ते के किनारे अंजीर का एक दरख्त देख कर उसके पास गया; और पत्तों के सिवा उस में कुछ न पाकर उससे कहा; "आइन्दा कभी तुझ में फल न लगे!" और अंजीर का दरख्त उसी दम सूख गया। २० शागिर्दों ने ये देख कर ताअ'ज्जुब किया और कहा "ये अन्जीर का दरख्त क्यूँकर एक दम में सूख गया?" २१ "ईसा' ने जवाब में उनसे कहा " मैं तुम से सच कहता हूँ" कि अगर ईमान रखो और शक न करो तो न सिर्फ वही करोगे जो अंजीर के दरख्त के साथ हुआ; बल्कि अगर इस पहाड़ से कह उखड़ जा और समुन्दर में जा पड़ तो यूँ ही हो जाएगा।" २२ और जो कुछ दुआ में ईमान के साथ माँगोगे वो सब तुम को मिलेगा " २३ जब वो हैकल में आकर ता'लीम दे रहा था; तो सरदार काहिनों और क्रौम के बुजुर्गों ने उसके पास आकर कहा "तू इन कामों को किस इख्तियार से करता है? और ये इख्तियार तुझे किसने दिया है।" २४ " ईसा' ने जवाब में उनसे कह,"मैं भी तुम से एक बात पूछता हूँ; अगर वो मुझे बताओगे तो मैं भी तुम को बताऊँगा कि इन कामों को किस इख्तियार से करता हूँ।" २५ यूहन्ना का बपतिस्मा कहाँ से था? आसमान की तरफ से या इन्सान की तरफ से ? "वो आपस में कहने लगे'अगर हम कहेँ आसमान की तरफ से तो वो हम को कहेगा'फिर तुम ने क्यूँ उसका यक्कीन न किया?' २६ और अगर कहेँ इन्सान की तरफ से तो हम अवाम से डरते हैं? क्यूँकि सब यूहन्ना को नबी जानते थे?।" २७ " पस उन्होने जवाब में ईसा' से कहा " हम नहीं जानते ।" उसने भी उनसे कहा, "मैं भी तुम को नहीं बताता कि मैं इन कामों को किस इख्तियार से करता हूँ।" २८ तुम क्या समझते हो? एक आदमी के

दो बेटे थे' उसने पहले के पास जाकर कहा, बेटा जा, और बाग़ में जाकर काम कर।' २९ उसने जवाब में कहा 'मैं नहीं जाऊँगा' मगर पीछे पछता कर गया। ३० फिर दूसरे के पास जाकर उसने उसी तरह कहा 'उसने जवाब दिया अच्छा जनाब ,मगर गया नहीं।' ३१ " इन दोनों में से कौन अपने बाप की मर्ज़ी बजा लाया? उन्होंने कहा " पहला " ईसा' ने उन से कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ कि महसूल लेने वाले और कस्बियाँ तुम से पहले ""खुदा"" की बादशाही में दाखिल होती हैं।" ३२ क्यकि यूहन्ना रास्तबाज़ी के तरीके पर तुम्हारे पास आया; और तुम ने उसका यक्रीन न किया; मगर महसूल लेने वाले और कस्बियों ने उसका यक्रीन किया; और तुम ये देख कर भी न पछताए; कि उसका यक्रीन कर लेते। ३३ एक और मिसाल सुनो; एक घर का मालिक था; जिसने बाग़ लगाया और उसकी चारों तरफ़ अहाता और उस में हौज़ खोदा और बुर्ज़ बनाया और उसे बाग़बानों को ठेके पर देकर परदेस चला गया। ३४ जब फल का मौसम करीब आया तो उसने अपने नौकरों को बाग़बानों के पास अपना फल लेने को भेजा। ३५ बाग़बानों ने उसके नौकरों को पकड़ कर किसी को पीटा किसी को क़त्ल किया और किसी को पथराव किया। ३६ फिर उसने और नौकरों को भेजा, जो पहलों से ज्यादा थे; उन्होंने उनके साथ भी वही सुलूक किया। ३७ आखिर उसने अपने बेटे को उनके पास ये कह कर भेजा कि 'वो मेरे बेटे का तो लिहाज़ करेंगे।' ३८ जब बाग़बानों ने बेटे को देखा, तो आपस में कहा; ये ही वारिस है, आओ 'इसे क़त्ल करके इसी की जायदाद पर क़ब्ज़ा कर लें' ३९ और उसे पकड़ कर बाग़ से बाहर निकाला और क़त्ल कर दिया।" ४० पस जब बाग़ का मालिक आएगा "तो उन बाग़बानों के साथ क्या करेगा?" ४१ उन्होंने उससे कहा "उन बदकारों को बूरी तरह हलाक करेगा; और बाग़ का ठेका दूसरे बाग़बानों को देगा, जो मौसम पर उसको फल दें।" ४२ "ईसा' ने उन से कहा, "क्या तुम ने किताबे मुक़द्दस में कभी नहीं पढ़ा'जिस पत्थर को मे'मारों ने रद्द किया, वही कोने के सिरे का पत्थर हो गया ; ये ""खुदावन्द"" की

तरफ़ से हुआ और हमारी नज़र में अजीब है।?” ४३ “ इसलिए मैं तुम से कहता हूँ कि “‘खुदा’” की बादशाही तुम से ले ली जाएगी और उस क्रौम को जो उसके फल लाए, दे दी जाएगी।” ४४ और जो इस पत्थर पर गिरेगा; ”टुकड़े टुकड़े हो जाएगा; लेकिन जिस पर वो गिरेगा उसे पीस डालेगा। ४५ जब सरदार काहिनों और फ़रीसियों ने उसकी मिसाल सुनी, तो समझ गए, कि हमारे हक़ में कहता है। ४६ और वो उसे पकड़ने की कोशिश में थे, लेकिन लोगों से डरते थे; क्योंकि वो उसे नबी जानते थे।

२२

१ और ईसा' फिर उनसे मिसालों में कहने लगा। २ “आस्मान की बादशाही उस बादशाह की तरह है जिस ने अपने बेटे की शादी की। ३ और अपने नौकरों को भेजा कि बुलाए हुआओं को शादी में बुला लाएँ, मगर उन्होने आना न चाहा। ४ फिर उस ने और नौकरों को ये कह कर भेजा, कि ‘बुलाए हुआओं से कहो, देखो; मैंने ज़ियाफ़त तैयार कर ली है, मेरे बैल और मोटे मोटे जानवर ज़बह हो चुके हैं और सब कुछ तैयार है; शादी में आओ। ५ मगर वो बे परवाई करके चल दिए; कोई अपने खेत को, कोई अपनी सौदागरी को। ६ और बाक़ियों ने उसके नौकरों को पकड़ कर बे'इज़ज़त किया और मार डाला। ७ बादशाह ग़ज़बनाक हुआ और उसने अपना लश्कर भेजकर उन खूनियों को हलाक कर दिया, और उन का शहर जला दिया। ८ तब उस ने अपने नौकरों से कहा, शादी का खाना तो तैयार है; मगर बुलाए हुए लायक़ न थे। ९ पस रास्तों के नाकों पर जाओ, और जितने तुम्हें मिलें शादी में बुला लाओ।’ १० और वो नौकर बाहर रास्तों पर जा कर, जो उन्हें मिले क्या बूरे क्या भले सब को जमा कर लाए और शादी की महफ़िल मेहमानों से भर गई। ११ जब बादशाह मेहमानों को देखने को अन्दर आया, तो उसने वहाँ एक आदमी को देखा, जो शादी के लिबास में न था। १२ उसने उससे कहा ‘मियाँ तू शादी की पोशाक पहने बग़ैर यहाँ क्यों कर आ गया?’ लेकिन उस का मुँह बन्द

हो गया। १३ इस पर बादशाह ने ख़ादिमों से कहा 'उस के हाथ पाँव बाँध कर बाहर अँधेरे में डाल दो, वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।' १४ "क्योंकि बुलाए हुए बहुत हैं, मगर चुने हुए थोड़े।" १५ उस वक़्त फ़रीसियों ने जा कर मशवरा किया कि उसे क्यों कर बातों में फँसाएँ। १६ "पस उन्होंने अपने शागिर्दों को हेरोदियों के साथ उस के पास भेजा, और उन्होंने कहा "ऐ उस्ताद हम जानते हैं कि तू सच्चा है और सच्चाई से ""खुदा"" की राह की तालीम देता है। और किसी की परवाह नहीं करता क्योंकि तू किसी आदमी का तरफ़दार नहीं।" १७ पस हमें बता तू क्या समझता है? कैसर को जिज़िया देना जायज़ है या नहीं?" १८ " ""ईसा"" ने उन की शरारत जान कर कहा, "ऐ रियाकारो, मुझे क्यों आज़माते हो?" १९ जिज़िये का सिक्का मुझे दिखाओ" वो एक दीनार उस के पास लाए। २० उसने उनसे कहा "ये सूरत और नाम किसका है?" २१ " उन्होंने उससे कहा "कैसर का।" उस ने उनसे कहा, "" पस जो कैसर का है कैसर को और जो ""खुदा"" का है ""खुदा"" को अदा करो।" २२ उन्होंने ये सुनकर ता'जुब किया, और उसे छोड़ कर चले गए। २३ उसी दिन सदूकी जो कहते हैं कि क़यामत नहीं होगी उसके पास आए, और उससे ये सवाल किया| २४ "ऐ उस्ताद, मूसा ने कहा था, कि अगर कोई बे औलाद मर जाए, तो उसका भाई उसकी बीवी से शादी कर ले, और अपने भाई के लिए नस्ल पैदा करे। २५ अब हमारे दर्मियान सात भाई थे, और पहला शादी करके मर गया; और इस वज़ह से कि उसके औलाद न थी, अपनी बीवी अपने भाई के लिए छोड़ गया। २६ इसी तरह दूसरा और तीसरा भी सातवें तक। २७ सब के बा'द वो औरत भी मर गई। २८ पस वो क़यामत में उन सातों में से किसकी बीवी होगी? क्योंकि सब ने उससे शादी की थी।" २९ " ईसा' ने जवाब में उनसे कहा, "तुम गुमराह हो; इसलिए कि न किताबे मुक़द्दस को जानते हो न ""खुदा"" की कुद्रत को।" ३० क्योंकि क़यामत में शादी बरात न होगी; बल्कि लोग आसमान पर फ़िरिशतों की तरह होंगे।

३१ “ मगर मुर्दों के जी उठने के बारे में “‘खुदा’” ने तुम्हें फ़रमाया था, क्या तुम ने वो नहीं पढ़ा?” ३२ “ ‘मैं इब्राहीम का खुदा, और इज़्हाक़ का खुदा और याक़ूब का खुदा हूँ? वो तो मुर्दों का “‘खुदा’” नहीं ‘बल्कि जिन्दों का खुदा है।’” ३३ लोग ये सुन कर उसकी ता’लीम से हैरान हुए। ३४ जब फ़रीसियों ने सुना कि उसने सदूकियों का मुँह बन्द कर दिया, तो वो जमा हो गए। ३५ और उन में से एक आलिम- ऐ शरा ने आजमाने के लिए उससे पूछा; ३६ “‘ऐ उस्ताद, तौरत में कौन सा हुक़म बड़ा है?’” ३७ उसने उस से कहा “ ‘खुदावन्द अपने खुदा से अपने सारे दिल, और अपनी सारी जान और अपनी सारी अक्ल से मुहब्बत रख।’ ३८ बड़ा और पहला हुक़म यही है। ३९ और दूसरा इसकी तरह ये है ‘कि अपने पड़ोसी से अपने बराबर मुहब्बत रख।’ ४० इन्ही दो हुक़मों पर तमाम तौरत और अम्बिया के सहीफ़ों का मदार है।” ४१ जब फ़रीसी जमा हुए तो ईसा ने उनसे ये पूछा; ४२ “‘तुम मसीह के हक़ में क्या समझते हो? वो किसका बेटा है ’उन्होंने उससे कहा “दाऊद का।” ४३ “ उसने उनसे कहा “‘पस दाऊद रूह की हिदायत से क्यूँकर उसे “‘खुदावन्द’” कहता है।” ४४ ‘खुदावन्द ने मेरे खुदावन्द से कहा, ‘मेरी दहनी तरफ़ बैठ जब तक में तेरे दुश्मनों को तेरे पाँव के नीचे न कर दूँ। ४५ “ पस जब दाऊद उसको “‘खुदावन्द’” कहता है तो वो उसका बेटा क्यूँकर ठहरा?’” ४६ कोई उसके जवाब में एक हर्फ़ न कह सका, और न उस दिन से फिर किसी ने उससे सवाल करने की जुरअत की।

२३

१ “ उस वक़्त “‘ईसा’” ने भीड़ से और अपने शागिर्दों से ये बातें कहीं। “ २ “फ़क़ीह और फ़रीसी मूसा की गद्दी पर बैठे हैं। ३ पस जो कुछ वो तुम्हें बताएँ वो सब करो और मानो, लेकिन उनकी तरह काम न करो; क्यूँकि वो कहते हैं, और करते नहीं। ४ वो ऐसे भारी बोझ जिनको उठाना मुश्किल है; बाँध कर लोगों के कंधों

पर रखते हैं, मगर खुद उनको अपनी उंगली से भी हिलाना नहीं चाहते। ५ वो अपने सब काम लोगों को दिखाने को करते हैं; क्योंकि वो अपने ता'वीज़ बड़े बनाते और अपनी पोशाक के किनारे चौड़े रखते हैं। ६ ज़ियाफ़तों में सद्द नशीनी और इबादतख़ानों में आ'ला दर्जे की कुर्सियाँ। ७ और बाज़ारों में सलाम'और आदमियों से रब्बी कहलाना पसंद करते हैं।' ८ मगर तुम रब्बी न कहलाओ, क्योंकि तुम्हारा उसताद एक ही है और तुम सब भाई हो ९ और ज़मीन पर किसी को अपना बाप न कहो, क्योंकि तुम्हारा'बाप 'एक ही है जो आसमानी है। १० और न तुम हादी कहलाओ, क्योंकि तुम्हारा हादी एक ही है, या'नी मसीह। ११ लेकिन जो तुम में बड़ा है, वो तुम्हारा खादिम बने। १२ जो कोई अपने आप को बड़ा बनायेगा, वो छोटा किया जायेगा; और जो अपने आप को छोटा बनायेगा, वो बड़ा किया जायेगा | १३ ऐ रियाकार; आलिमों और फ़रीसियो तुम पर अफ़सोस कि आसमान की बादशाही लोगों पर बन्द करते हो, क्योंकि न तो आप दाख़िल होते हो, और न दाख़िल होने वालों को दाख़िल होने देते हो। १४ ऐ रियाकार; आलिमों और फ़रीसियो तुम पर अफ़सोस, कि तुम बेवाओं के घरों को दबा बैठते हो, और दिखावे के लिए नमाज़ को तूल देते हो; तुम्हें ज्यादा सज़ा होगी। १५ ऐ रियाकार; फ़क़ीहो और फ़रीसियो तुम पर अफ़सोस, कि एक मुरीद करने के लिए तरी और ख़ुशकी का दौरा करते हो, और जब वो मुरीद हो चुकता है तो उसे अपने से दूना जहन्नुम का फ़र्ज़न्द बना देते हो। १६ ऐ अंधे राह बताने वालो , तुम पर अफ़सोस! जो कहते हो'अगर कोई मक़दिस की क़सम खाए तो कुछ बात नहीं; लेकिन अगर मक़दिस के सोने की क़सम खाए तो उसका पाबँद होगा।' १७ ऐ अहमको ! और अंधो सोना बड़ा है, या मक़दिस जिसने सोने को मक़दिस किया। १८ फिर कहते हो 'अगर कोई कुर्बानगाह की क़सम खाए तो कुछ बात नहीं; लेकिन जो नज़्र उस पर चढ़ी हो अगर उसकी क़सम खाए तो उसका पाबन्द होगा।' १९ ऐ अंधो! नज़्र बड़ी है या

कुर्बानगाह जो नज़्र को मुक़द्दस करती है? २० पस , जो कुर्बानगाह की क़सम खाता है, वो उसकी और उन सब चीज़ों की जो उस पर हैं क़सम खाता है। २१ और जो मक़दिस की क़सम खाता है वो उसकी और उसके रहनेवाले की क़सम खाता है। २२ “ और जो आस्मान की क़सम खाता है वह ““खुदा”” के तख़्त की और उस पर बैठने वाले की क़सम भी खाता है।” २३ ऐ रियाकार; आलिमों और फ़रीसियो तुम पर अफ़सोस कि पुदीना सौफ़ और ज़ीरे पर तो दसवां हिस्सा देते हो, पर तुम ने शरी'अत की ज़्यादा भारी बातों या'नी इन्साफ़, और रहम, और ईमान को छोड़ दिया है; लाज़िम था ये भी करते और वो भी न छोड़ते। २४ ऐ अंधे राह बताने वालो; जो मच्छर को तो छानते हो, और ऊँट को निगल जाते हो। २५ ऐ रियाकार; आलिमों और फ़रीसियो तुम पर अफ़सोस कि प्याले और रकाबी को ऊपर से साफ़ करते हो, मगर वो अन्दर लूट और ना'परहेज़गारी से भरे हैं। २६ ऐ अंधे फ़रीसी; पहले प्याले और रकाबी को अन्दर से साफ़ कर ताकि ऊपर से भी साफ़ हो जाए। २७ ऐ रियाकार; आलिमों और फ़रीसियो तुम पर अफ़सोस कि तुम सफ़ेदी फिरी हुई क़ब्रों की तरह हो, जो ऊपर से तो ख़ूबसूरत दिखाई देती हैं, मगर अन्दर मुर्दों की हड्डियों और हर तरह की नापाकी से भरी हैं। २८ इसी तरह तुम भी ज़ाहिर में तो लोगों को रास्तबाज़ दिखाई देते हो, मगर बातिन में रियाकारी और बेदीनी से भरे हो। २९ ऐ रियाकार; आलिमों और फ़रीसियो तुम पर अफ़सोस, कि नबियों की क़ब्रें बनाते और रास्तबाज़ों के मक़बरे आरास्ता करते हो। ३० और कहते हो, ‘अगर हम अपने बाप दादा के ज़माने में होते तो नबियों के खून में उनके शरीक न होते।’ ३१ इस तरह तुम अपनी निस्बत गवाही देते हो, कि तुम नबियों के क़ातिलों के फ़र्ज़न्द हो। ३२ गरज़ अपने बाप दादा का पैमाना भर दो। ३३ ऐ साँपो, ऐ अफ'ई के बच्चो; तुम जहनुम की सज़ा से क्यूँकर बचोगे? ३४ इसलिए देखो मैं नबियों, और दानाओं और आलिमों को तुम्हारे पास भेजता हूँ, उन में से तुम कुछ को क़त्ल और

मस्लूब करोगे, और कुछ को अपने इबादतखानों में कोड़े मारोगे, और शहर ब शहर सताते फिरोगे। ३५ ताकि सब रास्तबाज़ों का खून जो ज़मीन पर बहाया गया तुम पर आए, रास्तबाज़ हाबिल के खून से लेकर बरकियाह के बेटे ज़करियाह के खून तक जिसे तुम ने मक़दिस और कुर्बानगाह के दर्मियान क़त्ल किया। ३६ मैं तुम से सच कहता हूँ कि ये सब कुछ इसी ज़माने के लोगों पर आएगा। ३७ “ “ “ ऐ यरूशलीम “ “ ऐ यरूशलीम तू जो नबियों को क़त्ल करता और जो तेरे पास भेजे गए, उनको संगसार करता है, कितनी बार मैंने चाहा कि जिस तरह मुर्गी अपने बच्चों को परों तले जमा कर लेती है, इसी तरह मैं भी तेरे लड़कों को जमा कर लूँ; मगर तुम ने न चाहा। “ ३८ देखो; तुम्हारा घर तुम्हारे लिए वीरान छोड़ा जाता है। ३९ “ क्यूँकि मैं तुम से कहता हूँ, कि “ “ अब से मुझे फिर हरगिज़ न देखोगे; जब तक न कहोगे कि मुबारक है वो जो “ “ खुदावन्द “ “ के नाम से आता है। ” ”

२४

१ और ईसा' हैकल से निकल कर जा रहा था, कि उसके शागिर्द उसके पास आए, ताकि उसे हैकल की इमारतें दिखाएँ। २ उसने जवाब में उनसे कहा, “क्या तुम इन सब चीज़ों को नहीं देखते? मैं तुम से सच कहता हूँ, कि यहाँ किसी पत्थर पर पत्थर बाक़ी न रहेगा; जो गिराया न जाएगा।” ३ जब वो ज़ैतून के पहाड़ पर बैठा था, उसके शागिर्दों ने अलग उसके पास आकर कहा, “हम को बता ये बातें कब होंगी ? और तेरे आने और दुनिया के आखिर होने का निशान क्या होगा?” ४ ईसा' ने जवाब में उनसे कहा, “ख़बरदार कोई तुम को गुमराह न कर दे। ५ क्यूँकि बहुत से मेरे नाम से आएँगे और कहेंगे ‘मैं मसीह हूँ।’ और बहुत से लोगों को गुमराह करेंगे। ६ और तुम लड़ाइयाँ और लड़ाइयों की अफ़वाह सुनोगे, ख़बरदार, घबरा न जाना, क्यूँकि इन बातों का वाके होना ज़रूर है। ७ क्यूँकि क़ौम

पर क्रौम और सलतनत पर सलतनत चढाई करेगी, और जगह जगह काल पड़ेंगे, और भूचाल आएँगे। ८ लेकिन ये सब बातें मुसीबतों का शुरू ही होंगी। ९ उस वक़्त लोग तुम को तकलीफ़ देने के लिए पकड़वाएँगे, और तुम को क़त्ल करेंगे; और मेरे नाम की खातिर सब क्रौमों तुम से दुश्मनी रखेंगी। १० और उस उक़्त बहुत से ठोकर खाएँगे, और एक दूसरे को पकड़वाएँगे; और एक दूसरे से दुश्मनी रखेंगे। ११ और बहुत से झूटे नबी उठ खड़े होंगे, और बहुतों को गुमराह करेंगे। १२ और बेदीनी के बढ़ जाने से बहुतेरों की मुहब्बत ठंडी पड़ जाएगी। १३ लेकिन जो आख़िर तक बर्दाशत करेगा वो नजात पाएगा। १४ और बादशाही की इस ख़ुशख़बरी का एलान तमाम दुनिया में होगा, ताकि सब क्रौमों के लिए गवाही हो, तब खात्मा होगा। १५ “ पस जब तुम उस उजाड़ने वाली मकरूह चीज़ जिसका ज़िक्र दानीएल नबी की ज़रिये हुआ, मुक़द्दस मुकामों में खड़ा हुआ देखो ““(पढ़ने वाले संमझ लें) | “ १६ “तो जो यहूदिया में हों वो पहाड़ों पर भाग जाएँ। १७ जो छत पर हो वो अपने घर का माल लेने को नीचे न उतरे। १८ और जो खेत में हो वो अपना कपड़ा लेने को पीछे न लौटे १९ मगर अफ़सोस उन पर जो उन दिनों में हामिला हों और जो दूध पिलाती हों। २० पस, दुआ करो कि तुम को जाड़ों में या सबत के दिन भागना न पड़े। २१ क्यूँकि उस वक़्त ऐसी बड़ी मुसीबत होगी कि दुनिया के शुरू से न अब तक हुई न कभी होगी। २२ अगर वो दिन घटाए न जाते तो कोई बशर न बचता मगर चुने हुवों की खातिर वो दिन घटाए जाएँगे। २३ उस वक़्त अगर कोई तुम को कहे , ‘देखो, मसीह यहाँ है’ या ‘वह वहाँ है’ तो यक़ीन न करना। २४ क्यूँकि झूटे मसीह और झूटे नबी उठ खड़े होंगे और ऐसे बड़े निशान और अजीब काम दिखाएँगे कि अगर मुम्किन हो तो बरगुज़ीदों को भी गुमराह कर लें। २५ देखो, मैं ने पहले ही तुम को कह दिया है। २६ पस अगर वो तुम से कहें ,

‘देखो, वो वीरानो में है’ तो बाहर न जाना । या देखो, कोठरियों में है तो यक्रीन न करना ।^{२७} क्योंकि जैसे बिजली पूरब से कौंध कर पच्छिम तक दिखाई देती है वैसे ही इबने आदम का आना होगा ।^{२८} जहाँ मुर्दार है, वहाँ गिद्ध जमा हो जाएँगे ।^{२९} फ़ौरन इन दिनों की मुसीबत के बा'द सूरज तारीक हो जाएगा । और चाँद अपनी रौशनी न देगा, और सितारे आसमान से गिरेंगे और आस्मान की कुव्वतें हिलाई जाएँगी ।^{३०} और उस वक़्त इब्न-ए-आदम का निशान आस्मान पर दिखाई देगा । और उस वक़्त ज़मीन की सब क़ौमें छाती पीटेंगी; और इबने आदम को बड़ी कुदरत और जलाल के साथ आसमान के बादलों पर आते देखेंगी ।^{३१} और वो नरसिंगे की बड़ी आवाज़ के साथ अपने फ़रिश्तों को भेजेगा और वो उसके चुने हुवों को चारों तरफ़ से आसमान के इस किनारे से उस किनारे तक जमा' करेंगे ।^{३२} अब अन्जीर के दरख्त से एक मिसाल सीखो, । जैसे ही उसकी डाली नर्म होती और पत्ते निकलते हैं तुम जान लेते हो कि गर्मी नज़दीक है ।^{३३} इसी तरह जब तुम इन सब बातों को देखो, तो जान लो कि वो नज़दीक बल्कि दरवाज़े पर है ।^{३४} मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक ये सब बातें न हो लें ये नस्ल हरगिज़ तमाम न होगी ।^{३५} आसमान और ज़मीन टल जाएँगी लेकिन मेरी बातें हरगिज़ न टलेंगी ।^{३६} लेकिन उस दिन और उस वक़्त के बारे मे कोई नहीं जानता, न आसमान के फ़रिश्ते न बेटा मगर, सिर्फ़ बाप ।^{३७} जैसा नूह के दिनों में हुआ वैसा ही इबन-ए- आदम के आने के वक़्त होगा ।^{३८} क्योंकि जिस तरह तूफ़ान से पहले के दिनों में लोग खाते पीते और ब्याह शादी करते थे, उस दिन तक कि नूह नाव में दाखिल हुआ ।^{३९} और जब तक तूफ़ान आकर उन सब को बहा न ले गया, उन को ख़बर न हुई, उसी तरह इबने आदम का आना होगा ।^{४०} उस वक़्त दो आदमी खेत में होंगे, एक ले लिया जाएगा, और दूसरा छोड़ दिया जाएगा, ^{४१} दो औरतें चक्की पीसती होंगी, एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जाएगी ।^{४२} “ पस जागते

रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा ““खुदावन्द”” किस दिन आएगा “ ४३ लेकिन ये जान रखो, कि अगर घर के मालिक को मा'लूम होता कि चोर रात के कौन से पहर आएगा, तो जागता रहता और अपने घर में नक़ब न लगाने देता। ४४ इसलिए तुम भी तैयार रहो, क्योंकि जिस घड़ी तुम को गुमान भी न होगा इबने आदम आ जाएगा। ४५ पस वो ईमानदार और अक्लमन्द नौकर कौन सा है, जिसे मालिक ने अपने नौकर चाकरों पर मुकर्रर किया ताकि वक़्त पर उनको खाना दे। ४६ मुबारक है वो नौकर जिसे उस का मालिक आकर ऐसा ही करते पाए। ४७ मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वो उसे अपने सारे माल का मुख्तार कर देगा। ४८ लेकिन अगर वो ख़राब नौकर अपने दिल में ये कह कर कि मेरे मालिक के आने में देर है।' ४९ अपने हमख़िदमतों को मारना शुरू करे, और शराबियों के साथ खाए पिए। ५० तो उस नौकर का मालिक ऐसे दिन कि वो उसकी राह न देखता हो और ऐसी घड़ी कि वो न जानता हो आ मौजूद होगा। ५१ और ख़ूब कोड़े लगा कर उसको रियाकारों में शामिल करेगा वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।

२५

१ उस वक़्त आसमान की बादशाही उन दस कुँवारियों की तरह होगी जो अपनी मशा'लें लेकर दुल्हा के इस्तक़बाल को निकलीं। २ उन में पाँच बेवकूफ़ और पाँच अक्लमन्द थीं। ३ जो बेवकूफ़ थीं उन्होंने अपनी मशा'लें तो ले लीं मगर तेल अपने साथ न लिया। ४ मगर अक्लमन्दों ने अपनी मशा'लों के साथ अपनी कुप्पियों में तेल भी ले लिया। ५ और जब दुल्हा ने देर लगाई तो सब ऊँघने लगीं और सो गईं। ६ आधी रात को धूम मची'देखो, दूल्हा आ गया, उसके इस्तक़बाल को निकलो!' ७ उस वक़्त वो सब कुँवारियाँ उठकर अपनी अपनी मशा'लों को दुरुस्त करने लगीं। ८ और बेवकूफ़ों ने अक्लमन्दों से कहा 'अपने तेल में से कुछ हम को भी दे दो। क्योंकि

हमारी मशालें बुझी जाती हैं।' ९ अक्लमन्दों ने जवाब दिया, 'शायद हमारे तुम्हारे दोनों के लिए काफ़ी न हो, बेहतर ये है कि बेचने वालों के पास जाकर, अपने लिए मोल ले लो।' १० जब वो मोल लेने जा रही थी, तो दुल्हा आ पहुँचा और जो तैयार थीं, वो उस के साथ शादी के जशन में अन्दर चली गई, और दरवाज़ा बन्द हो गया। ११ फिर वो बाक़ी कुँवारियाँ भी आईं और कहने लगीं 'ऐ खुदावन्द ऐ खुदावन्द। हमारे लिए दरवाज़ा खोल दे।' १२ उसने जवाब में कहा 'मैं तुम से सच कहता हूँ कि मैं तुम को नहीं जानता।' १३ पस जागते रहो, क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो न उस वक़्त को। १४ क्योंकि ये उस आदमी जैसा हाल है, जिसने परदेस जाते वक़्त अपने घर के नौकरों को बुला कर अपना माल उनके सुपुर्द किया। १५ एक को पाँच तोड़े दिए, दूसरे को दो, और तीसरे को एक या'नी हर एक को उसकी काबिलियत के मुताबिक़ दिया और परदेस चला गया। १६ जिसको पाँच तोड़े मिले थे, उसने फ़ौरन जाकर उनसे लेन देन किया, और पाँच तोड़े और पैदा कर लिए। १७ इसी तरह जिसे दो मिले थे, उसने भी दो और कमाए। १८ मगर जिसको एक मिला था, उसने जाकर ज़मीन खोदी और अपने मालिक का रुपया छिपा दिया। १९ बड़ी मुद्दत के बा'द उन नौकरों का मालिक आया और उनसे हिसाब लेने लगा। २० " जिसको पाँच तोड़े मिले थे, वो पाँच तोड़े और लेकर आया, और कहा, तूने पाँच तोड़े मुझे सुपुर्द किए थे, "" देख मैंने पाँच तोड़े और कमाए।" २१ " उसके मालिक ने उससे कहा, "" ऐ अच्छे और ईमानदार नौकर शाबाश; तू थोड़े में ईमानदार रहा मैं तुझे बहुत चीज़ों का मुख़्तार बनाऊँगा; अपने मालिक की खुशी में शरीक हो।" २२ " और जिस को दो तोड़े मिले थे, उस ने भी पास आकर कहा, तूने दो तोड़े मुझे सुपुर्द किए थे, "" देख मैंने दो तोड़े और कमाए।" २३ " उसके मालिक ने उससे कहा, "" ऐ अच्छे और दियानतदार नौकर शाबाश; तू थोड़े में ईमानदार रहा मैं तुझे बहुत चीज़ों का मुख़्तार बनाऊँगा; अपने मालिक की खुशी में शरीक हो।" २४

२४ “ और जिसको एक तोड़ा मिला था, वो भी पास आकर कहने लगा, “” ऐ खुदावन्द “” मैं तुझे जानता था, कि तू सरल आदमी है, और जहाँ नहीं बोया वहाँ से काटता है, और जहाँ नहीं बिखेरा वहाँ से जमा करता है। “ २५ “ पस मैं डरा और जाकर तेरा तोड़ा ज़मीन में छिपा दिया, “” देख जो तेरा है वो मौजूद है। ” २६ “ ‘उसके मालिक ने जवाब में उससे कहा, “” ऐ शरीर और सुस्त नौकर तू जानता था कि जहाँ मैंने नहीं बोया वहाँ से काटता हूँ, और जहाँ मैंने नहीं बिखेरा वहाँ से जमा करता हूँ। “ २७ पस तुझे लाज़िम था, कि मेरा रुपया साहूकारों को देता, तो मैं आकर अपना माल सूद समेत ले लेता।’ २८ पस इससे वो तोड़ा ले लो और जिस के पास दस तोड़े हैं उसे दे दो। २९ क्योंकि जिस के पास है उसे दिया जाएगा और उस के पास ज्यादा हो जाएगा, मगर जिस के पास नहीं है उससे वो भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा। ३० और इस निकम्मे नौकर को बाहर अँधेरे में डाल दो, और वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।’ ३१ जब इबने आदम अपने जलाल में आया, और सब फ़रिश्ते उसके साथ आएँगे; तब वो अपने जलाल के तख्त पर बैठेगा। ३२ और सब क़ौमों उस के सामने जमा की जाएँगी। और वो एक को दूसरे से जुदा करेगा। ३३ और भेड़ों को अपने दाहिने और बकरियों को बाँए जमा करेगा। ३४ उस वक़्त बादशाह अपनी तरफ़ वालों से कहेगा ‘आओ मेरे बाप के मुबारक लोगो, जो बादशाही दुनियाँ बनाने से पहले से तुम्हारे लिए तैयार की गई है उसे मीरास में ले लो। ३५ क्योंकि मैं भूखा था तुमने मुझे खाना खिलाया, मैं प्यासा था तुमने मुझे पानी पिलाया, मैं परदेसी था तूने मुझे अपने घर में उतारा। ३६ नंगा था तुमने मुझे कपड़ा पहनाया, बीमार था तुमने मेरी ख़बर ली, मैं कैद में था, तुम मेरे पास आए।’ ३७ तब रास्तबाज़ जवाब में उससे कहेंगे ‘ऐ खुदावन्द, हम ने कब तुझे भूखा देख कर खाना खिलाया, या प्यासा देख कर पानी पिलाया? ३८ हम ने कब तुझे मुसाफ़िर देख कर अपने घर में उतारा? या नंगा देख कर कपड़ा पहनाया। ३९ हम कब तुझे

बीमार या कैद में देख कर तेरे पास आए।?’ ४० बादशाह जवाब में उन से कहेगा‘मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुम ने मेरे सब से छोटे भाइयों में से किसी के साथ ये सुलूक किया, तो मेरे ही साथ किया।’ ४१ फिर वो बाएँ तरफ़ वालों से कहेगा, ‘मल’ऊनो मेरे सामने से उस हमेशा की आग में चले जाओ, जो इब्लीस और उसके फ़रिश्तों के लिए तैयार की गई है। ४२ क्योंकि, मैं भूखा था तुमने मुझे खाना न खिलाया, प्यासा था तुमने मुझे पानी न पिलाया। ४३ मुसाफिर था तुम ने मुझे घर में न उतारा नंगा था, तुम ने मुझे कपड़ा न पहनाया, बीमार और कैद में था, तुम ने मेरी ख़बर न ली।’ ४४ “ ‘तब वो भी जवाब में कहेंगे, “” ऐ खुदावन्द “” हम ने कब तुझे भूखा,या प्यासा, या मुसाफिर,या नंगा, या बीमार या कैद में देखा कर तेरी ख़िदमत न की?’ ” ४५ उस वक़्त वो उनसे जवाब में कहेगा‘मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तुम ने इन सब से छोटों में से किसी के साथ ये सुलूक न किया, तो मेरे साथ न किया। ४६ और ये हमेशा की सज़ा पाएँगे, मगर रास्तबाज़ हमेशा की ज़िन्दगी।”

२६

१ जब ईसा' ये सब बातें ख़त्म कर चुका, तो ऐसा हुआ कि उसने अपने शागिर्दों से कहा। २ “तुम जानते हो कि दो दिन के बाद ईद-ए-फ़सह होगी। और इब्न-ए-आदम मस्लूब होने को पकड़वाया जाएगा।” ३ उस वक़्त सरदार काहिन और क्रौम के बुजुर्ग काइफ़ा नाम सरदार काहिन के दिवान ख़ाने में जमा हुए। ४ और मशवरा किया कि ईसा' को धोखे से पकड़ कर क़त्ल करें। ५ मगर कहते थे “ईद में नहीं, ऐसा न हो कि लोगों में बलवा हो जाए।” ६ और जब ईसा' बैत अन्नियाह में शमा'ऊन कोढ़ी के घर में था। ७ तो एक औरत संग-मरमर के इत्रदान में कीमती इत्र लेकर उसके पास आई, और जब वो खाना खाने बैठा तो उस के सिर पर डाला। ८ शागिर्द ये देख कर खफ़ा हुए और कहने लगे“ये किस लिए बर्बाद किया गया? ९ ये तो बड़ी कीमत में बिक कर ग़रीबों को दिया जा सकता

था।” १० ईसा' ने ये जान कर उन से कहा इस औरत को क्यों दुखी करते हो ? इस ने तो मेरे साथ भलाई की है। ११ क्योंकि ग़रीब गुरबे तो हमेशा तुम्हारे पास हैं लेकिन मैं तुम्हारे पास हमेशा न रहूँगा। १२ और इस ने तो मेरे दफ़न की तैयारी के लिए इत्र मेरे बदन पर डाला। १३ मैं तुम से सच कहता हूँ, कि तमाम दुनिया में जहाँ कहीं इस खुशख़बरी का एलान किया जाएगा, ये भी जो इस ने किया; इस की यादगारी में कहा जाएगा।” १४ उस वक़्त उन बारह में से एक ने जिसका नाम यहूदाह इस्करियोती था; सरदार काहिनों के पास जा कर कहा। १५ अगर मैं उसे तुम्हारे हवाले कर दूँ तो मुझे क्या दोगे? उन्होंने उसे तीस रुपये तौल कर दे दिया।” १६ और वो उस वक़्त से उसके पकड़वाने का मौक़ा ढूँडने लगा। १७ ईद-ए-फ़ितर के पहले दिन शागिर्दों ने ईसा' के पास आकर कहा? तू कहाँ चाहता है कि हम तेरे लिए फ़सह के खाने की तैयारी करें।” १८ उस ने कहा “शहर में फ़लाँ शरूस् के पास जा कर उससे कहना ‘उस्ताद फ़रमाता है कि मेरा वक़्त नज़दीक है मैं अपने शागिर्दों के साथ तेरे यहाँ ईद'ए फ़सह करूँगा।” १९ और जैसा ईसा' ने शागिर्दों को हुक्म दिया था, उन्होंने वैसा ही किया और फ़सह तैयार किया। २० जब शाम हुई तो वो बारह शागिर्दों के साथ खाना खाने बैठा था। २१ जब वो खा रहा था, तो उसने कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा।” २२ वो बहुत ही ग़मगीन हुए और हर एक उससे कहने लगे “खुदावन्द, क्या मैं हूँ?” २३ उस ने जवाब में कहा, “जिस ने मेरे साथ रक्बाबी में हाथ डाला है वही मुझे पकड़वाएगा। २४ इबने आदम तो जैसा उसके हक़ में लिखा है जाता ही है लेकिन उस आदमी पर अफ़सोस जिसके वसीले से इबने आदम पकड़वाया जाता है अगर वो आदमी पैदा न होता तो उसके लिए अच्छा होता।” २५ उसके पकड़वाने वाले यहूदाह ने जवाब में कहा “ऐ रब्बी क्या मैं हूँ?” उसने उससे कहा “तूने खुद कह दिया।” २६ “जब वो खा रहे थे तो ईसा' ने रोटी ली और और

बरकत देकर तोड़ी “और शागिर्दों को देकर कहा, ”” लो, खाओ, ये मेरा बदन है।” २७ फिर प्याला लेकर शुक्र किया और उनको देकर कहा “तुम सब इस में से पियो। २८ क्योंकि ये मेरा वो अहद का खून है जो बहुतों के गुनाहों की मु'आफ़ी के लिए बहाया जाता है। २९ मैं तुम से कहता हूँ, कि अंगूर का ये शीरा फिर कभी न पियूँगा, उस दिन तक कि तुम्हारे साथ अपने बाप की बादशाही में नया न पियूँ।” ३० फिर वो गीत गाकर बाहर ज़ैतून के पहाड़ पर गए। ३१ उस वक़्त ईसा' ने उनसे कहा “तुम सब इसी रात मेरी वजह से ठोकर खाओगे क्योंकि लिखा है; मैं चरवाहे को मारूँगा' और गल्ले की भेंड़े बिखर जाएँगी।’ ३२ लेकिन मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहले गलील को जाऊँगा।” ३३ पतरस ने जवाब में उससे कहा “चाहे सब तेरी वजह से ठोकर खाएँ, लेकिन मैं कभी ठोकर न खाऊँगा।” ३४ “ईसा' ने उससे कहा ““मैं तुझसे सच कहता हूँ, इसी रात मुर्ग के बाँग देने से पहले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।” ३५ पतरस ने उससे कहा, “अगर तूरे साथ मुझे मरना भी पड़े। तोभी तेरा इन्कार हरगिज़ न करूँगा ” और सब शागिर्दों ने भी इसी तरह कहा। ३६ उस वक़्त ईसा' उनके साथ गतसिमनी नाम एक जगह में आया और अपने शागिर्दों से कहा। “यहीं बैठे रहना जब तक कि मैं वहाँ जाकर दुआ करूँ।” ३७ और पतरस और ज़बदी के दोनों बेटों को साथ लेकर गमगीन और बेकरार होने लगा। ३८ उस वक़्त उसने उनसे कहा, “मेरी जान निहायत गमगीन है यहाँ तक कि मरने की नौबत पहुँच गई है, तुम यहाँ ठहरो, और मेरे साथ जागते रहो।” ३९ फिर ज़रा आगे बढ़ा और मुँह के बल गिर कर यूँ दुआ की, “ऐ मेरे बाप, अगर हो सके तो ये प्याला मुझ से टल जाए, तोभी न जैसा मैं चाहता हूँ; बल्कि जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।” ४० फिर शागिर्दों के पास आकर उनको सोते पाया और पतरस से कहा “क्या तुम मेरे साथ एक घड़ी भी न जाग सके ”? ४१ जागते और दुआ करते रहो ताकि आज्माइश में न पड़ो, रूह तो मुस्त'इद है मगर जिस्म कमज़ोर है।” ४२ फिर दोबारा

उसने जाकर यूँ दुआ की “ऐ मेरे बाप अगर ये मेरे पिये बग़ैर नहीं टल सकता तो तेरी मर्ज़ी पूरी हो।” ४३ और आकर उन्हें फिर सोते पाया, क्योंकि उनकी आँखें नींद से भरी थीं। ४४ और उनको छोड़ कर फिर चला गया, और फिर वही बात कह कर तीसरी बार दुआ की। ४५ तब शागिर्दों के पास आकर उसने कहा “अब सोते रहो, और आराम करो, देखो वक़्त आ पहुँचा है, और इबने आदम गुनाहगारों के हवाले किया जाता है। ४६ उठो चलें, देखो, मेरा पकड़वाने वाला नज़दीक आ पहुँचा है।” ४७ वो ये कह ही रहा था, कि यहूदाह जो उन बारह में से एक था, आया, और उसके साथ एक बड़ी भीड़ तलवारें और लाठियाँ लिए सरदार काहिनों और क्रौम के बुजुर्गों की तरफ़ से आ पहुँची। ४८ और उसके पकड़वाने वाले ने उनको ये निशान दिया था, जिसका मैं बोसा लूँ वही है उसे पकड़ लेना। ४९ “और फ़ौरन उसने ईसा' के पास आ कर कहा ! ““ऐ रब्बी सलाम! ““और उसके बोसे लिए।” ५० ईसा' ने उससे कहा, “मियाँ जिस काम को आया है वो कर ले”? इस पर उन्होंने पास आकर ईसा' पर हाथ डाला और उसे पकड़ लिया।” ५१ और देखो, ईसा' के साथियों में से एक ने हाथ बढ़ा कर अपनी तलवार खींची और सरदार काहिन के नौकर पर चला कर उसका कान उड़ा दिया। ५२ ईसा' ने उससे कहा, “अपनी तल वार को मियान में कर क्योंकि जो तलवार खींचते हैं वो सब तलवार से हलाक किए जाएँगे। ५३ क्या तू नहीं समझता कि मैं अपने बाप से मिन्नत कर सकता हूँ, और वो फ़रिश्तों के बारह पलटन से ज्यादा मेरे पास अभी मौजूद कर देगा? ५४ मगर वो लिखे हुए का यूँ ही होना ज़रूर है क्यूँ कर पूरे होंगे?” ५५ उसी वक़्त ईसा' ने भीड़ से कहा, “क्या तुम तलवारें और लाठियाँ लेकर मुझे डाकू की तरह पकड़ने निकले हो? मैं हर रोज़ हैकल में बैठकर ता'लीम देता था, और तुमने मुझे नहीं पकड़ा। ५६ मगर ये सब कुछ इसलिए हुआ कि नबियों की नबूवत पूरी हों।” इस पर सब शागिर्द उसे छोड़ कर भाग गये। ५७ और ईसा' के पकड़ने वाले उसको काइफ़ा

नाम सरदार काहिन के पास ले गए, जहाँ आलिम और बुजुर्ग जमा हुए थे। ५८ और पतरस दूर दूर उसके पीछे पीछे सरदार काहिन के दिवानखाने तक गया, और अन्दर जाकर प्यादों के साथ नतीजा देखने को बैठ गया। ५९ सरदार काहिन और सब सद्दे-ए अदालत वाले ईसा' को मार डालने के लिए उसके खिलाफ झूठी गवाही ढूँडने लगे। ६० मगर न पाई, गरचे बहुत से झूठे गवाह आए, लेकिन आखिरकार दो गवाहों ने आकर कहा। ६१ “ इस ने कहा है “कि मैं “खुदा” के मक़दिस को ढा सकता और तीन दिन में उसे बना सकता हूँ।” ६२ और सरदार काहिन ने खड़े होकर उससे कहा, तू जवाब नहीं देता? ये तेरे खिलाफ़ क्या गवाही देते हैं?” ६३ “ मगर ईसा' खामोश ही रहा, सरदार काहिन ने उससे कहा, मैं तुझे ज़िन्दा “खुदा” की क़सम देता हूँ, “कि अगर तू “खुदा” का बेटा मसीह है तो हम से कह दे?” ६४ ईसा' ने उससे कहा, तू ने खुद कह दिया, बल्कि मैं तुम से कहता हूँ, कि इसके बा'द इबने आदम को क़ादिर-ए मुतलक़ की दहनी तरफ़ बैठे और आसमान के बादलों पर आते देखोगे।” ६५ इस पर सरदार काहिन ने ये कह कर अपने कपड़े फाड़े उसने कुफ़्र बका है अब हम को गवाहों की क्या जरूरत रही? देखो, तुम ने अभी ये कुफ़्र सुना है। ६६ तुम्हारी क्या राय है? उन्होंने जवाब में कहा, “वो क़त्ल के लायक़ है।” ६७ इस पर उन्होंने उसके मुँह पर थूका और उसके मुक़्के मारे और कुछ ने तमांचे मार कर कहा। ६८ “ऐ मसीह, हमें नुबुव्वत से बता कि तुझे किस ने मारा।” ६९ पतरस बाहर सहन में बैठा था, कि एक लौंडी ने उसके पास आकर कहा, “तू भी ईसा' गलीली के साथ था।” ७० उसने सबके सामने ये कह कर इन्कार किया “मैं नहीं जानता तू क्या कहती है।” ७१ और जब वो डचोढ़ी में चला गया तो दूसरी ने उसे देखा, और जो वहाँ थे , उनसे कहा, ये भी ईसा' नासरी के साथ था।” ७२ उसने क़सम खा कर फिर इन्कार किया “मैं इस आदमी को नहीं जानता।” ७३ थोड़ी देर के बा'द जो वहाँ खड़े थे, उन्होंने पतरस के पास आकर कहा, “बेशक

तू भी उन में से है, क्योंकि तेरी बोली से भी ज़ाहिर होता है।” ७४ इस पर वो ला'नत करने और क्रसम खाने लगा “मैं इस आदमी को नहीं जानता!” और फ़ौरन मुर्ग ने बाँग दी। ७५ पतरस को ईसा' की वो बात याद आई जो उसने कही थी “मुर्ग के बाँग देने से पहले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।” और वो बाहर जाकर ज़ार ज़ार रोया।”

२७

१ जब सुबह हुई तो सब सरदार काहिनों और क्रौम के बुजुर्गों ने ईसा' के ख़िलाफ़ मशवरा किया कि उसे मार डालें। २ और उसे बाँध कर ले गए, और पीलातुस हाकिम के हवाले किया। ३ जब उसके पकड़वाने वाले यहूदाह ने ये देखा, कि वो मुजरिम ठहराया गया, तो अपसोस किया और वो तीस रुपये सरदार काहिन और बुजुर्गों के पास वापस लाकर कहा। ४ मैंने गुनाह किया, “कि बेकुसूर को क़त्ल के लिए पकड़वाया।” उन्होंने ने कहा “हमें क्या! तू जान।” ५ वो रुपयों को मक़दिस में फेंक कर चला गया। और जाकर अपने आपको फाँसी दी। ६ सरदार काहिन ने रुपये लेकर कहा “इनको हैकल के ख़ज़ाने में डालना जायज़ नहीं; क्योंकि ये खून की क्रीमत है।” ७ पस उन्होंने मशवरा करके उन रुपयों से कुम्हार का खेत परदेसियों के दफ़न करने के लिए ख़रीदा। ८ इस वजह से वो खेत आज तक खून का खेत कहलाता है। ९ उस वक़्त वो पूरा हुआ जो यरमियाह नबी के जरिये कहा गया था “कि जिसकी क्रीमत ठहराई गई थी, उन्होंने उसकी क्रीमत के वो तीस रुपये ले लिए, (उसकी क्रीमत कुछ बनी इस्राईल ने ठहराई थी)। १० “ और उसको कुम्हार के खेत के लिए दिया, जैसा ““खुदावन्द”” ने मुझे हुक्म दिया।” ११ “ ईसा' हाकिम के सामने खड़ा था, और कहा ““क्या तू यहूदियों का बादशाह है?” ईसा' ने उस से कहा, “तू खुद कहता है।” १२ जब सरदार काहिन और बुजुर्ग उस पर इल्ज़ाम लगा रहे थे, उसने कुछ जवाब न दिया। १३ इस पर पीलातुस ने उस से कहा “क्या तू नहीं सुनता, ये तेरे ख़िलाफ़ कितनी गवाहियाँ देते हैं?” १४ उसने एक

बात का भी उसको जवाब न दिया, यहाँ तक कि हाकिम ने बहुत ता'ज्जुब किया। १५ और हाकिम का दस्तूर था, कि ईद पर लोगों की खातिर एक कैदी जिसे वो चाहते थे छोड़ देता था। १६ उस वक़्त बरअब्बा नाम उन का एक मशहूर कैदी था। १७ पस जब वो इकटठे हुए तो पीलातुस ने उस से कहा, “तुम किसे चाहते हो कि तुम्हारी खातिर छोड़ दूँ? बरअब्बा को या ईसा' को जो मसीह कहलाता है?” १८ क्योंकि उसे मा'लूम था, कि उन्होंने उसको जलन से पकड़वाया है। १९ और जब वो तख़्त- ए आदालत पर बैठा था तो उस की बीवी ने उसे कहला भेजा “तू इस रास्तबाज़ से कुछ काम न रख क्योंकि मैंने आज ख़्वाब में इस की वजह से बहुत दुःख उठाया है।” २० लेकिन सरदार काहिनों और बुजुर्गों ने लोगों को उभारा कि बरअब्बा को माँग लें, और ईसा' को हलाक कराएँ। २१ हाकिम ने उनसे कहा इन दोनों में से किसको चाहते हो कि तुम्हारी खातिर छोड़ दूँ? उन्होंने कहा “बरअब्बा को।” २२ पीलातुस ने उनसे कहा “फिर ईसा' को जो मसीह कहलाता है क्या करूँ?” सब ने कहा “वो मस्लूब हो।” २३ उसने कहा “क्यूँ? उस ने क्या बुराई की है?” मगर वो और भी चिल्ला चिल्ला कर कहने लगे “वो मस्लूब हो!” २४ जब पीलातुस ने देखा कि कुछ बन नहीं पड़ता बल्कि उल्टा बलवा होता जाता है तो पानी लेकर लोगों के रूबरू अपने हाथ धोए “और कहा, मैं इस रास्तबाज़ के खून से बरी हूँ; तुम जानो।” २५ सब लोगों ने जवाब में कहा “इसका खून हमारी और हमारी औलाद की गर्दन पर।” २६ इस पर उस ने बरअब्बा को उनकी खातिर छोड़ दिया, और ईसा' को कोड़े लगवा कर हवाले किया कि मस्लूब हो। २७ इस पर हाकिम के सिपाहियों ने ईसा' को क्लिले में ले जाकर सारी पलटन उसके आस पास जमा की। २८ और उसके कपड़े उतार कर उसे क्रिमिज़ी चोगा पहनाया। २९ और काँटों का ताज बना कर उसके सिर पर रखवा, और एक सरकन्डा उस के दहने हाथ में दिया और उसके आगे घुटने टेक कर उसे ठठों में उड़ाने लगे; “ए यहूदियों के बादशाह,

आदाब!” ३० और उस पर थूका, और वही सरकन्डा लेकर उसके सिर पर मारने लगे। ३१ और जब उसका ठट्टा कर चुके तो चोगे को उस पर से उतार कर फिर उसी के कपड़े उसे पहनाए; और मस्लूब करने को ले गए। ३२ जब बाहर आए तो उन्होंने शमा'ऊन नाम एक कुरेनी आदमी को पाकर उसे बेगार में पकड़ा, कि उसकी सलीब उठाए। ३३ और उस जगह जो गुलगुता या'नी खोपड़ी की जगह कहलाती है पहुँचकर। ३४ पित मिली हुई मय उसे पीने को दी, मगर उसने चख कर पीना न चाहा। ३५ और उन्होंने उसे मस्लूब किया; और उसके कपड़े पर्चा डाल कर बाँट लिए। ३६ और वहाँ बैठ कर उसकी निगहबानी करने लगे। ३७ और उस का इल्ज़ाम लिख कर उसके सिर से ऊपर लगा दिया “ कि ये यहूदियों का बादशाह ईसा' है।” ३८ उस वक़्त उसके साथ दो डाकू मस्लूब हुए, एक दहने और एक बाएँ। ३९ और राह चलने वाले सिर हिला हिला कर उसको ला'न ता'न करते और कहते थे। ४० “ “ए मक्कदिस के ढानेवाले और तीन दिन में बनाने वाले अपने आप को बचा; अगर तू ““खुदा”” का बेटा है तो सलीब पर से उतर आ।”” ४१ इसी तरह सरदार कहिन भी फकीहों और बुजुर्गों के साथ मिलकर ठट्टे से कहते थे, | ४२ “इस ने औरों को बचाया, अपने आप को नहीं बचा सकता, ये तो इस्राईल का बादशाह है, अब सलीब पर से उतर आए, तो हम इस पर ईमान लाएँ। ४३ “ इस ने ““खुदा”” पर भरोसा किया है, अगरचे इसे चाहता है तो अब इस को छुड़ा ले, क्योंकि इस ने कहा था, 'मैं ““खुदा”” का बेटा हूँ।”” ४४ इसी तरह डाकू भी जो उसके साथ मस्लूब हुए थे, उस पर ला'न ता'न करते थे। ४५ और दोपहर से लेकर तीसरे पहर तक तमाम मुल्क में अन्धेरा छाया रहा। ४६ और तीसरे पहर के करीब ईसा' ने बड़ी आवाज़ से चिल्ला कर कहा “एली, एली, लमा शबक़ तनी ”ऐ मेरे खुदा, ऐ मेरे खुदा, “तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?” ४७ जो वहाँ खड़े थे उन में से कुछ ने सुन कर कहा “ये एलियाह को पुकारता है।” ४८ और फ़ौरन उनमें से एक शरूस् दौडा और सोखते

को लेकर सिरके में डुबोया और सरकन्डे पर रख कर उसे चुसाया। ४९ मगर बाकियों ने कहा, “ठहर जाओ, देखें तो एलियाह उसे बचाने आता है या नहीं।” ५० ईसा' ने फिर बड़ी आवाज़ से चिल्ला कर जान दे दी। ५१ और मक्कदिस का पर्दा ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया, और ज़मीन लरज़ी और चट्टानें तड़क गईं। ५२ और क़ब्रें खुल गईं। और बहुत से जिस्म उन मुक़द्दसों के जो सो गए थे, जी उठे। ५३ और उसके जी उठने के बाद क़ब्रों से निकल कर मुक़द्दस शहर में गए, और बहुतों को दिखाई दिए। ५४ “पस सुबेदार और जो उस के साथ ईसा' की निगहबानी करते थे, भोंचाल और तमाम माजरा देख कर बहुत ही डर कर कहने लगे “बै -शक ये ““खुदा”” का बेटा था।” ५५ और वहाँ बहुत सी औरतें जो गलील से ईसा' की खिदमत करती हुई उसके पीछे पीछे आई थीं, दूर से देख रही थीं। ५६ उन में मरियम मगदलीनी थी, और या'क़ूब और योसेस की माँ मरियम और ज़ब्दी के बेटों की माँ। ५७ जब शाम हुई तो यूसुफ़ नाम आरिमतियाह का एक दौलतमन्द आदमी आया जो खुद भी ईसा' का शागिर्द था। ५८ उस ने पीलातुस के पास जा कर ईसा' की लाश माँगी, इस पर पीलातुस ने दे देने का हुक्म दे दिया। ५९ यूसुफ़ ने लाश को लेकर साफ़ महीन चादर में लपेटा। ६० और अपनी नई क़ब्र में जो उस ने चट्टान में खुदवाई थी रखवा, फिर वो एक बड़ा पत्थर क़ब्र के मुँह पर लुढ़का कर चला गया। ६१ और मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम वहाँ क़ब्र के सामने बैठी थीं। ६२ दूसरे दिन जो तैयारी के बा'द का दिन था, सरदार काहिन और फ़रीसियों ने पीलातुस के पास जमा होकर कहा। ६३ खुदावन्द हमें याद है “कि उस धोकेबाज़ ने जीते जी कहा था, मैं तीन दिन के बा'द जी उठूँगा। ६४ पस हुक्म दे कि तीसरे दिन तक क़ब्र की निगहबानी की जाए, कहीं ऐसा न हो कि उसके शागिर्द आकर उसे चुरा ले जाएँ, और लोगों से कह दें, वो मुर्दे में से जी उठा, और ये पिछला धोखा

पहले से भी बुरा हो।” ६५ “पीलातुस ने उनसे कहा “तुम्हारे पास पहरे वाले हैं” जाओ, जहाँ तक तुम से हो सके उसकी निगहबानी करो।” ६६ पस वो पहरेवालों को साथ लेकर गए, और पत्थर पर मुहर करके क़ब्र की निगहबानी की।

२८

१ सबत के बा'द हफ़्ते के पहले दिन धूप निकलते वक़्त मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम क़ब्र को देखने आईं। २ “ और देखो, एक बड़ा भूचाल आया क्योंकि ““खुदा”” का फ़रिश्ता आसमान से उतरा और पास आकर पत्थर को लुढ़का दिया; और उस पर बैठ गया। ३ उसकी सूरत बिजली की तरह थी, और उसकी पोशाक बर्फ़ की तरह सफ़ेद थी। ४ और उसके डर से निगहबान काँप उठे, और मुर्दा से हो गए। ५ फ़रिश्ते ने औरतों से कहा, “तुम न डरो। क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम ईसा' को ढूँड रही हो जो मस्लूब हुआ था। ६ “ वो यहाँ नहीं है, क्योंकि अपने कहने के मुताबिक़ जी उठा है; आओ ये जगह देखो जहाँ ““खुदावन्द”” पड़ा था। ७ “ और जल्दी जा कर उस के शागिर्दों से कहो वो मुर्दा में से जी उठा है, और देखो; वो तुम से पहले गलील को जाता है वहाँ तुम उसे देखोगे, देखो मैंने तुम से कह दिया है।” ८ और वो खौफ़ और बड़ी खुशी के साथ क़ब्र से जल्द रवाना होकर उसके शागिर्दों को ख़बर देने दौड़ीं। ९ और देखो ईसा' उन से मिला, और उस ने कहा, “सलाम।” उन्होंने पास आकर उसके क़दम पकड़े और उसे सज्दा किया। १० इस पर ईसा' ने उन से कहा, “डरो नहीं। जाओ, मेरे भाइयों से कहो कि गलील को चले जाएँ, वहाँ मुझे देखेंगे।” ११ जब वो जा रही थीं, तो देखो; पहरेवालों में से कुछ ने शहर में आकर तमाम माजरा सरदार काहिनों से बयान किया। १२ और उन्होंने बुजुर्गों के साथ जमा होकर मशवरा किया और सिपाहियों को बहुत सा रुपया दे कर कहा। १३ ये कह देना, कि रात को जब हम सो रहे थे “उसके शागिर्द आकर उसे चुरा

ले गए। १४ ““अगर ये बात हाकिम के कान तक पहुँची तो हम उसे समझाकर तुम को खतरे से बचा लेंगे”” १५ पस उन्होंने रुपया लेकर जैसा सिखाया गया था, वैसा ही किया; और ये बात यहूदियों में मशहूर है। १६ और ग्यारह शागिर्द गलील के उस पहाड़ पर गए, जो ईसा' ने उनके लिए मुकर्रर किया था। १७ उन्होंने उसे देख कर सज्दा किया, मगर कुछ ने शक किया। १८ ईसा' ने पास आ कर उन से बातें की और कहा “आस्मान और ज़मीन का कुल इखतियार मुझे दे दिया गया है। १९ पस तुम जा कर सब क़ौमों को शागिर्द बनाओ और उन को बाप और बेटे और रूह-उल-कुदूस के नाम से बपतिस्मा दो। २० और उन को ये ता'लीम दो, कि उन सब बातों पर अमल करें जिनका मैंने तुम को हुक्म दिया; और देखो, मैं दुनिया के आखिर तक हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।”

उर्दू बाइबिल

The New Testament in the Urdu language, BCS 2017

copyright © 2017 Bridge Connectivity Solutions

Language: उर्दू (Urdu)

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution Share-Alike license 4.0.

You have permission to share and redistribute this Bible translation in any format and to make reasonable revisions and adaptations of this translation, provided that:

You include the above copyright and source information.

If you make any changes to the text, you must indicate that you did so in a way that makes it clear that the original licensor is not necessarily endorsing your changes.

If you redistribute this text, you must distribute your contributions under the same license as the original.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

Note that in addition to the rules above, revising and adapting God's Word involves a great responsibility to be true to God's Word. See Revelation 22:18-19.

2017-11-27

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 27 Sep 2019 from source files dated 27 Sep 2019

bb64bcb8-2153-5c47-9a6f-7f45fece3c84